वे॰रा॰
५२
43

गा नाभर किंकनी छबि छाई ॥ वनमाल मुकमाल के
दवनी कौस्तुभ मणि पीताम्बर चटक नामै दामिनि
दुति पाई ॥ बाजूबंद अंगदि मुंदरि नगन की अति व
झन्कार अरुण अधर मधुर स्वर मुरली वजाई ॥ कम
ल नयन विमल कांति कुंडल छवि बिंब होत आनन्द
सो स्वरव मानो रम्योरी झमकाई ॥ घुंघर वारी अलक

झलक कीयें चंदन खौर ओर मोर मुकुट सीस धरें बनी
सुंदरताई ॥ कहें भगवान हितराम राय प्रभुको निर
खि श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रटलाई ॥ रागिनी
बंगाली ताल ४ ॥ श्रीवल्लभ सुजस संततनिज
उर गाऊं ॥ अस्थाई ॥ मन क्रम वचन छिन एक
न बिसराऊं ॥ अंतरा ॥ पुरुषोत्तम अवतार सुकृत

वे॰गा॰
५५
44

फल फलित जगत वंदन श्री विठलेश उलराऊं ॥ पर
सि पद कमल रज निरखि सौंदर्य निधि प्रेम पुलकित
कलुष कोटि कन साऊं ॥ श्री गिरिधरन देवपति मान
मर्दन करन घोष रतक खावदखजन खनाऊं ॥ श्रीगो
विंद ग्वाल संगाय ले चलत वन निरखि नैन नति सिराऊं॰
श्री बाल कृस्न मदा सहज बालक दसा कमल लोचन सो

13 ठि ६

हरषित हवि वढाऊ ॥ भक्ति मारग सुदृढ करन गु
ण राशि ब्रज मंगल श्री गोकुल नाथही लडाऊ ॥ श्री
रघुनाथ धर्म धुरधार सोभा सिंध रूप लहरिन डुवे हरि
वराऊ ॥ पतित उद्धरन महाराज श्री जदुनाथ विशद
पंकज हाथ सिरसि परसाऊ ॥ श्री घन श्याम अभिराम
रूप वाघा साजी आसा लागि रसना वाचि कर दाऊं ॥

बं.ग.
४५
45

वन्नभंजदास परेव द्वार अणिपन करे सकल जलको
चरणामृत मोर उदि पाऊ ॥ रागिनी बंगाली ता
ल ३ ॥ भजि श्री विट्ठल चरणसरोजे ॥ इन्द्रस्या
ई ॥ नारमणि सीयनि दमिन मनोजे ॥ इंद्रनरा
इच्छसि यदि मनने खलेखारे ॥ भजसिन किमि
नि विषय धनभारे ॥ यदि वांछसि हरिभक्ति सार

२३ कृ.६

न्ते ॥ कुरु चपले गुरुणा गतयन्ते ॥ प्राप्य सुदुर्ल
भ नर देहं ॥ परिहर सकल नियम संदेहं ॥ मान
य हृदय मयोदित वचने ॥ तद्द्या सिनो वेदनिश
य पवने ॥ वक्षपदं भावय भवजलधिं ॥ अंतसमै
भवाधिन वधिं ॥ नाथ नवाह मिनी रागा गावे ॥
हृदय सनन्त निमग्न विभावे ॥ नव रागा गाणा कथ्य

बे॰रा॰ ४६

46

ना म्रतगाये ॥ प्राची मिंदं दिशा नव रत्न नाथे ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ ॥ रति संग्राम वीर रस माते

इन स्याई ॥ डोहरी सब सिरोमणि अजहूं नहिन संभार

सकल अंग नाते ॥ अंतरा ॥ औरे बरन भये पलोचन

अपने अपने सहज बिनाते ॥ मानहु भीरपरी औधन

कीनाते भये क्रोध अति राते ॥ परिमल लब्ध जहो

१५ क्रं॰ ८

अलि बैठत उडि उडि उडि नहि सकत नहोंने ॥ जन
मन मध्य सर वागे फाटे फोंक होत सब वाहरि जा
ने ॥ बैठि जात अलि सात उनीदे क्रम क्रम क्रम करि
उठत नहोंने ॥ मन मरछा करात नाट सलेकाढ
त नाहि बुझ्यो हियराने ॥ डग मगात ह्रमन जो घा
यल शोभा अति भई सुभट कलाने ॥ सूरदास स्वा

बे॰रा॰ श्री रणजीत प्रव सरूचन यौं हौ नमकाने ॥ रागिनी
४७ बेगाली ताल ४ ॥ जागिये गोपाल लाल आनंद
47
निधि नंदलाल जसमति कहै बार बार भोर भयो प्यारे
हनपखाई ॥ नयन कमल से विसाल प्रीति वापिका म
राल वदन ललित चंदनने ऊपर कोटि वारिडारे ॥
अंग्नरा ॥ उगत अरुण विगत सर्वरीस संक किरनि

हीन दीन दीप मलिन छीन इति सब हू तोरे ॥ सनङ्क
ज्ञान घन प्रकास बीते सब भव बिलास आस त्रास ति
मिरलोप नरनि नेज जोरे ॥ बोलन खग सबर निकर
मधुकर झौरे प्रवीन सनङ्क परम प्राण जीवन धन मेरे
त्रम तोरे ॥ मनो बेद बंदी मुनि सूत छंद मागध गान बि
रद बदन जै जै जै जैन कैटभारे ॥ बिगसित कमलावली

वे॰रा
४८
48

वल अफंद ववरीद गंजन कल पुनि त्यागि केजन्यारे ॥ म
नो विराग पाय सकल सोक कूप गृह विहाय प्रेम मन फि
रत भ्रमत गनन गण निहारे ॥ स्रनन वचन प्रियरसाल
जागे अतिसै दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदंब
टारे ॥ त्यागे भ्रम फंद द्वंद निरखि के मुखार विंद
सूरदास अति अनंद मेटे मद भारे ॥ ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल २ षट्पदी ॥ मंगल रूप
यशोदानंद ॥ स्थाई ॥ मंगल मुकुट कान मधि
कुंडल मंगल तिलक विराजवंद ॥ अंतरा ॥ मंगल
भूषन सब अंग सोहत मंगल मूरत आनंद कंद ॥ मंग
ल लकुट कांवरि मे चांपे मंगल मुरलि वजावत मंद ॥
मंगल चाल मनोहर मंगल दरसन होत मिटो दुखदंद

बे॰रा ४५ 49 मंगलं ब्रज पति नाम सबन को मंगल जस गावत
श्रुति छंद ॥ रागिनी बंगाली ताल ० षट्पदी
अबकी नीकी लोनी छबि भोरही दिखाइये ॥ इन
स्याई ॥ निशि के उनींदे नैन तोतरात मीठे बैन भाव
न होजीके मेरे मनही बढ़ाइये ॥ इंग्यतरा ॥ सक
ल सुख करन त्रिविध तापहरन उनको तिमिर बा

प्यौ नवनन माइये ॥ हरि दधि ग्वाल बाल करउ क
लेउ लाल मिश्री रोटी छोटी मोटी माखन सौं खाइ
ये ॥ ननिक सो मेरो कन्हैया वारि फेरि डारी मैया बे
नी नो गुहे बानय गहरुन लाइये ॥ परमानंद जन
जननि मोदित मन फूली फूली फूलीउर प्रेमान स
माइये ॥ रागिनी बंगाली ताल १ षट्पदी ॥

वे·ग·
५·
50

जागिये गोपाल लाल जननी वलि जाई ॥ ह्यरह्याई ॥
उठौ तात भयो प्रात रजनी को तिमिर गयो प्रगटे सब ग्वा
ल बाल मोहन कन्हाई ॥ ह्येनरा ॥ उठो मेरे आनंद कंद
गगन चंद मंद मंद प्रगटो प्रकाश भोर कमलनि सुख
दाई ॥ सिंगी सब करत बेन तुम बिना न छुटे धेनु उठी
लाल तजो सेज सुंदर बर गई ॥ मातवैं पट दुर कियो

जसुदा कौं दरस दियो अरु हथि सब मोति लियो बिबि
धि रस मिठाई ॥ जेंवन दोउ राम स्याम सकल मंगल
गुण निधान थारमैं कछु जूठ रही सो मान दास पाई ॥
रागिनी बंगाली ताल २ षट्पदी ॥ प्रान नाथ प्रान
गयो जागो बलि जाऊं ॥ इस्यस्थाई ॥ सोना केर गोफ
न सबैन मैं गुथाऊं ॥ इस्यंतरा ॥ उगत सूरज जोति

वे॰रा॰ भई अलहिरीवनाऊं ॥ पाय वोधें वेद्धन अक वालि वो
५१ सिखाऊं ॥ सूरदास मदन मोहन गुण तिहारे गाऊं ॥
51 हरषि निरषि छविके उपर वलि वलि वलि जाऊं ॥
रागिनी वेंगाली ताल १ षट्पदी ॥ रैन जागी
पिय संग रंग भोनी ॥ उठत प्याई ॥ प्रफुलित मुव
कंजनैन खंजरीट मीन मैन विथुरि रहे हरन कच वद

न अोप कीनी ॥ इस्पेतरा ॥ आनन आलस जंभान प्र
ल किन अति पान खान मद माते नन मयिन रही सिथ
ल भई वेनी ॥ मांगमैं टरी मका हल अलक संग अरु
झि रही उरगान सन फनि मानौं केत्र किन तजि दीनी ॥
विकसत ज्यौं चंपकली भेर भए भवन चली लट पटात
प्रेम वटा गज गनि गने लीन्ही ॥ आरति को करत नास

बे·रा·
५२

गिरधर छवि छबि की राशि सूरदास स्वामिनि गुन गने
न जात कीन्हीं ॥ रागिनी बंगाली ताल ८ षट्पदी
भोर अंग अंग शोभा श्याम के भली ॥ ध्रुवस्थाई ॥ म
नहु विगसित विचित्र नील कमल की कली ॥ प्रिया
उरसि लसत राग सरस छुटिन छवि पराग पवन पर
सि मंदले सुगंध कौवली ॥ करि प्रवेश घ्राण द्वार ह

रति जुवति चित हार मरम वेधि समर वान काम ने व
ली ॥ पलटि वसन सुवेनिधान मत्त मधुप करन
गान सुरत सभै सुजस सुनो श्रवन दे अली ॥ गोपा
ल दास मरन मोहन कुंज भदन वलित रंग मदित अ
वनि भावनी सुमाति केरली ॥ इतिप्राभोगः ॥
रागिनी बंगाली ताल ॥ ३ ॥ षट्पदी ॥

बे॰ रा॰
५३
53

नाहि उघत नयना रतनारे ॥ स्थाई ॥ जान वेधक
सुमन विसाल पर सुंदर श्याम सिली मुखवनारे ॥ इनते
नरा ॥ रही जुअलक कुटिल कुंडल परसोतन चितवन
चिते बिसारे ॥ सिथिल मोह धनु गहे मदन गुण रहे
कोकनद वानविवारे ॥ मेदेही आवत है येलोचन
पलक आतुर उघरतन उघारे ॥ सूरदास प्रभु सोई यों

ब॰ ५

कहो ऐसी को वनिता जासौं रति रन हारे ॥ रागिनी बे
गाली माल ३ षट्पदी ॥ आवत लाल गोवर्द्धनधारी
इत्यस्थाई ॥ अलस नयन सरस रस रंगित प्रिया प्रेम
नूतन अनुहारी ॥ इत्यंतरा ॥ विलुलित माल मरग
जी उर पर सुरत समर की लगी पराग ॥ चुंबन श्या
म अधर रस गावत सुरति भाव सुरवे भैरव राग ॥ पल

वे·ग· ५७ 57

दि पैरै पटनील सखी के रसमें झीलत मदन तडाग ॥
वृंदावन वीथिनि अवलोकत हलदास लोचन वड
भाग ॥ रागिनी बंगाली ताल ४ षट्पदी ॥
ऐसेही घरोरी दधि बिना मथन किये देहुजसमति
नेकु अपनीरई ॥ इतस्याई ॥ अपनडे फूढि हारी
जैसी निशि अंधियारी पाउन भवन माझ कहां थो

गई ॥ अंतरा ॥ कछुन जिय सुहाई याहीतें आतुर
आई लोनी के लालच जीय चट पटी भई ॥ दिना चारि
करी काज वाको नंदजू को राज जो लों वहुरि हों ल्याऊं
नई ॥ चतुर्भुज दास रानी मेरी अति चोप जानी है अस
न्न मणि महरिया आनि दई ॥ भोरही देउं असीस वार
जिनिवि सो सीस निहारे गिरिधर की हों वलि वलि गई.

बं·रा·
५५
55

रागिनी बंगाली ताल झंप षट्पदी ॥ श्रीनाथजी
को ध्यान मेरे निशा दिनारी माई ॥ इनयस्थाई ॥ माधुरी
मूरति मोहनी सूरति चित लियो चनराई ॥ इत्येनरा
लाल पाग लटकि भाल चित्रक बेसर कंठमाल करन
फूल मंद हास लोचन खर्वदाई ॥ मोर पंख सीस धरें
मोतिन के हार गरे बाजू बंद पहुंचिन कर मुद्रिका सुहा

ई ॥ छुद्र घंटिका जेहरि नूपुर किंकिणी सबदेस अंग अं
ग देखत उरआनंद समाई ॥ मुरली अधर धरे श्याम
ठाढे ब्रज जुवति माह सम सुरन तान गान गोवर्द्धन राई
निरखि रूप अति अनूप जाके सुर नर विमान वल्लभ
पद किंकर दामोदर बलि जाई ॥ रागिनी बंगाली ता
ल षट्पदी ॥ चर्चरी [illegible] नाथ हाहा मोहि दरशदी

वे॰ग जे ॥ अस्थाई ॥ दीप जिनि मन परो सहज करुणा
५६ करो विगार सागन मोहि दास करि लीजे ॥ अंतरा ॥
56 तुव बिन छिन होत जिय वदन देखे बिना रैन दिन नप
न चित कैसे जीजे ॥ कासो कहिये हिये राखिये को
न विधि रहत नही कोंहू करि देह छीजे ॥ लेत न
उसास उर कैसे हो समाइ नही सोत्र दृग भरि न पीजे ॥

बदन लावति अम्रत रसिक प्रीतम स्वेदपान बिन

सकल तन कैसे भीजे ॥ रागिनी बंगाली ताल ॥

वर्वरी ॥ नेकु बोलो नाथ अम्रत रसबैन ॥ इतप्यासी

है ॥ और न सुहाइ परी करनिहौं हाइ तिन चित न

लागत कहूं नेकु नही चैन ॥ दीनजन मन मनोर

थ के श्रवन करन और तिहूं लोक मैं देखियत हैन ॥

बे·रा·

५७

जे मिलन आइते लन सरव सुभाव करि कहो कैसे हरि
मन रहे पैन ॥ अरघ्य वन रावरौहे निहारे हाथ नाथ क
हो औरु समरथ्यहे कोदेन ॥ रसिक पिया जिनिकरो क
ठिन मनदीन पर परसिके नजन पर लषन तो उदेन
रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी ॥ जैजैजै श्री
वल्लभ नेद ॥ अनस्थाई ॥ कोटिकला छेदावन वेद ॥

इसंनरा ॥ निगम विचारैन लहै पार ॥ सो ठाकुर प्रका

के द्वार ॥ लीला करि गिरधरयौ हाथ ॥ छीति स्वामि

श्री विठल नाथ ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी

मदन गोपाल हमारे राम ॥ इन्गस्थाई ॥ धनुषबान च

रि बिमल बेन कर पीत बसन अरु तन घनश्याम ॥ इसं

नरा ॥ अपनो भुज जिनि जल निधि बांध्यो रासन बाए

कोटिक काम ॥ दस सिर हनि सब असुर संघारि गोवर्द्ध
न धार्‍यो कर बाम ॥ नव रघुवर अब जदुबर नागर ली
ला नित्य विमल बहु नाम ॥ परमानंद प्रभु भेद रहित
हरि निज जन मिलि गावत गुण ग्राम ॥ रागिनी
बेंगाली ताल ३ षट्पदी ॥ नीको मन ला
ग्यो गिरि धर गावै ॥ रति सुख पाई ॥ ततथेई ततथे

ई भैरव रगामिलि मुरलिका वजावै ॥ इत्येतरा ॥
नौवन नृप वृषभान नंदिनी औधर मतिरंग उपजा
वै ॥ नूपुर क्वणित मधुर मणि कंकण सखी नृत्य
मधुरासि वजावै ॥ स्वरत देत मथमन मधुप कुल प
क ताली सबके मन भावै ॥ स्वरनि सिंधु प्यारी पिय
पद रज कुसदास न्योछावर पावै ॥ रागिनी वेगाली

वे॰रा॰
५५
८१

ताल ८ ॥ जागिये ब्रजराज कुंवर कमल फूले ॥
इत्यस्थाई ॥ कुमुद ह्वेद सकुचि भये भृंगलतना भूले ॥
इत्यंतरा ॥ तमचुर खग रोर सुनउ बोलत बनराई ॥
रांभति गौवीर देन बछरा हित धाई ॥ विधु मली
न रवि प्रकास गावत ब्रजनारी ॥ सूर श्याम प्रा
न उठे अंबुज करधारी ॥ इतिश्रीभैरागः ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल २ ॥ अष्टपदी ॥ भोरनि कुंज
भवनतैं भामिनि ॥ इत्यस्थाई ॥ आवनिहै लटकति गा
जगामिनि ॥ इत्यंतरा ॥ अनक सुगंध सगावगी छुटी॰
निसि के उनींदे नैंन वीर वहूटी ॥ पलटित वसन रसन
मणि भूषण ॥ सोभा अंग अंग जिन दूषण ॥ राणा
नियान वृषभान दुलारी ॥ दास गोपाल लाल जूकी प्यारी

बे॰रा॰
८॰
60

रागिनी बंगाली ताल २ अष्टपदी ॥ अरुण नैन
राजत प्रेम भोरे ॥ इति घुमयाई ॥ अति स्रव स्रवत कि
ये ललना संग जागत समद मन्मथ सर जोरे ॥ अलंपतरा
गति उनीदे अलसात मराल गति गोलक चपल रहत
कछु थोरे ॥ मनहुं कमल के कोसते पीनम फंदन
रहत ह्यांप रिपु दल दोरे ॥ सजल कोप अतिमें ज्वसो

भिथन संगाम छवि तोरे पर छोरे ॥ मन भावते मेंवर
मीन शिशु जान नवल चितवन चितचोरे ॥ वरनि न
जाइ कहांलो वरनों प्रेम जलद वे लावल छोरे ॥ सूर
दाससो कोन त्रिया जिनि हरि के सकल अंग वल तोरे
रागिनी बंगाली ताल ८ अष्टपदी ॥ सुमिरो
नर नागर वर सुंदर गोपाल लाल ॥ इति अस्थाई ॥

वे·रा
६१
61

सबहैं दुरवि मिटि जैहैं चितवत लोचन बिसाल भ्रुव-
भंगनि ॥ अलकन की झलकन लखि पलक
निगति भूलि जात भ्रू विलास मंदहास रदनहास
छदन अति रसाल ॥ निंदत रवि कुंडल छवि गंड
मकर झलमलात पिक्क गव्व हंत वनेस इंदु वि
मल विंदु भाल ॥ अंग अंग जित अनंग माधुरी तरंग

प्र· २

रंग विमद मदगयंद होत देखत लटकीली चाल ॥ र
नन रसन पीत वसन चारु हार वर सृंगार तुलसी रवि
कुसुम खचित पीन उरनवीन माल ॥ ब्रजनरेस वे
सदीप वृंदावन वर महीप श्री वृषभान मान्य पात्र सह
ज दीन जन दयाल ॥ रसिक रूप रूप रासि गुन निधा
न जान राय गदा धर प्रभ जुवती जन मनि मानसमन

बे॰रा॰ मराल ॥ रागिनी बेगाली ताल ३ अष्टपदी ॥
८२ दीनो दरस सपने में आइ ॥ इतनस्थाई ॥ छिन एक
सुख उपज्यो मेरे मन गये कहूं हरि विरह बढाइ ॥
इत्यंतरा ॥ हाहा पाइ परति हों तेरे कौं हू करि लावे
न बुलाइ ॥ अब न परत मोपैं न रह्यो छिन बिन भेटे
जीय अति अकुलाइ ॥ यह दुख काहि कहों सखि

तो बिन मेरे नहीं एक सहाइ ॥ कहा बिलंब कर
ति जेव को तो सौं कहति सखि सोहे खोइ ॥ वह
मूरति गडि रही हियेमें निकसति नहीं न औरउपा
इ ॥ उठिये हे लाल बिनती मेरी जखमति खरन सि
कन कौं राइ ॥ रागिनी बंगाली ताल ध्रुपदी
चचैरी ॥ हरिके बिमखन को मख जिनि दिखावे

वे·रा·
६२
63

अस्थाई ॥ जिनि दिखावे नाथ जिनि दिखावे ॥
जिनकी सेवा नि किये होत उरमति हिये हरिके च
रण रूप जस नरत विसरावे ॥ अंतरा ॥ जिनके
परसत सदा सरस मन विषय रस मगन कै जात
श्रवनि पाप उपजावे ॥ करत कछुना उरैवेर मैं वि
न परे मन सेवा परि हरे जवति चित लावे ॥ साधु

निंदा करै झूठ भाषै सदा प्रीति रावै विषयी वचन
मन भावै ॥ अनेक साधन करि जारि राख्यो भाव
छिन मैं जल अग्नि ज्यौं बुझावै ॥ तेई जन विसरै
जे करै औरे वात कुलन सुहान संसार पावै ॥ साधु
संगति रहै वचन हरि गुण कहै सतत निवहै रसि
क सोई सार पावै ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥

के. रा.
६४
64

अष्टपदी ॥ प्रकटित सकल सृष्टि आधार ॥ इतिश्र
ध्याई ॥ श्रीमद्वल्लभ राज कुमार ॥ अंतरा ॥ ध्ये
य सदा पद अंबुज सार ॥ अगणित गुण महिमाज
अपार ॥ धर्मादिक ह्वै प्रतिहार ॥ शुद्ध भक्ति कौं
अंगीकार ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर अवतार ॥ नंद
दास कीनो बलिहार ॥ रागिनी बंगाली ताल

अष्टपदी ॥ जै जै श्रीवल्लभ प्रभुश्री विट्ठलेशनाथे ॥ द्व
निजुरुयाई ॥ निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे
ध्रुव ॥ हुंगतरा ॥ दोष सबै हरि करत भक्त भाव हिये
भरत काज सबै सरत सदा गावत गुण गाथे ॥ कारे
को देह दमत साधन करि मरवे जड विष मान ग्रा
नेर तजि गहत कौं सुपाथे ॥ रसिक चरण शरण स

बे॰ रा॰ दा रहत नहैं बडभागी जन अपनो करि गोकुल पति भ
६५ रत नाहि बाधे ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥
65 अष्टपदी ॥ अथ रासके कीर्तन ॥ राग रँगनि मिल
वन नई ॥ इत्यस्थाई ॥ नाचति ब्रजललना ननु थे
ई ॥ इत्यंतरा ॥ मावरित कटि नट मणि मेखला ॥
भ्रमिन वजनि चंचल करतला ॥ नूपुर संचित मोरि

नकुना। लेति उवगगति प्रभु दिन मूना॥ कृसनदास
प्रभु देखेक वारी॥ रिझए लाल गोवर्द्धन धारी॥
रागिनी बेंगाली ताल ॐ१ अष्टपदी॥ नाच वृषभान
सुता हंस सुता पुलिन मध्य हंस हंसिनी मधुर मंडली
बनी॥ स्थाई॥ गावन गोपाल लाल मिलवन
रूपनाल चाल लजित प्रति सत मदन कामिनी अनी·

पदिक लाल केठ माल नवल तिलक झलक भाल स्र
वण फूल वरड फूल नासिकामनी ॥ नील कंठकी
सुदेश चंपकली गलित केस सुरवित मणि दाम बो
म कटि सुकाञ्छनी ॥ मरकत मणि वलयराव सु
लित नूपुर सुभाव जावक जन चरण नावन चेंदि
कायनी ॥ मंदहास भोरपास रासलास सुव विलास

चलत लागे लेन सुघर राधिका रानी ॥ कामधेय कि
नव वंधरीज रहे ववण गहे साथ साथ करहन फिरत
राधिका रानी ॥ भेटन गहि बाहु मूल उरज परस
भई फूल श्याम वचन मानुकूल रसिक जीवनी ॥
रागिनी वेगाली ताल ३ अष्टपदी ॥ जननि ज
गावति उठे कन्हाई ॥ रागस्थाई ॥ प्रकटो नरति

बे॰ गा॰
६७
67

किरनि गन छाई । इत्येतरा ॥ आवहु चंदवदन दि
खाई ॥ बार बार जननी बलि जाई ॥ सखो हा
र सब तुमहि बुलावत ॥ तुम कारन हम था
य आवत ॥ सूर श्याम उठि दरशन दीन्हो ॥
माता देखि मुदित मन कीन्हो ॥ इति श्री ।
भोगः ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल २ जमुनापद ॥ जमुना
जमुना नाम भजो ॥ इतिअस्थाई ॥ हरि जनकरो
श्रायन इनको और कुपंथ तजो ॥ इत्यंतरा ॥ देहैं
सकल पदारथ तनको औरको नाहि भजो ॥ ब्रज
पतिकी अतिही प्यारी हैं तातैं सकल सृंगार सजो
समुदाय ॥ रागिनी बंगाली ताल १ जमुनापद

बे॰गा॰ ६८

68

प्रकटियो नीलो वर पीताम्बर महियो ॥ अन्तस्थाई
कुंडल लोल ललट बेसर मों पीत पटहार जुमें बनमा
ल वहियों मे वहियो ॥ अन्तरा ॥ हंसगति प्रति
छवि अंग अंग रही फवि उपमा विलोकि वेको
पटन र नहियो ॥ काम कलोल छूटे सेजहू
के सब लटे सुर प्रभ विलसे कदम हूकी छहियां

रागिनी बंगाली ताल ३ ॥ अरुण उदय आ
ये मेरे नंदलाल ॥ इत्यस्थाई ॥ सिथलित अंग उ
नींदे नयननि घरनी धरत डगमगी चाल ॥ इत्य
न्तरा ॥ अधरनि अंजन पीक कपोलनि लटपटि
पाग जावक लिय भाल ॥ तापर मोंह करत हो
ब्रजपति उरसि बिराजत बिन गुण माल ॥ ॥

वे॰रा॰ रागिनी वेंगाली ताल ३ जमुनापद ॥ प्रात
८९ समय आवत गिरिधारी ॥ ध्रुवस्थाई ॥ कुंजमह
८९ लतै चले भोर उठि संग राजति वृषभान दुलारी ॥
अंतरा ॥ घूमत नयन उनींदे निशि के निरखि
सहचरी गइ बलि हारी ॥ पीक कपोलनि लगे
दुहूनि के व्रजपति सिथिल गात अति भारी ॥

रागिनी बेंगाली ताल ॥ः जमनापद चर्चरी ॥
सुमिरि मन गोपाल लाल सुंदर अति रूप जाल मि
टि है जंजाल सकल निरखत मेंरा गोप बाल ॥ इस्थ
स्थाई ॥ मोर मुकुट शीशधरे बन माल सुभग गरे
सबको मन हरे देखि कुंडल की झलक गाल ॥
अंतरा ॥ आभूषन अंग सोहे मोतिन के हार पोहे

बे. रा. कैटसरी मोहे स्याम गोपी निरखत निहाल ॥ छीत
८. स्वामी गोवर्द्धन धारी कुवर नंद सुवन गाइनके पा
70 छे पाछे धरतहैं लटकीली चाल ॥ रागिनी बे
गाली ताल जमनापद चर्चरी ॥ प्रात भया
जागो बलि मोहन सुखदाई ॥ स्थाई ॥ जन
नी कहे बार बार उठो प्रातके प्यार मेरे सुखहार

श्याम सुंदर कन्हाई ॥ अनंतरा ॥ दूध दही माखन
घृत मिसरी मेवा बदाम पकवान भांति भांति विविध
रस मलाई ॥ छीत स्वामी गोवर्द्धन धारी लाल भोजन
करि ग्वालन के संग वन गोचारन जाई ॥ रागिनी
बंगाली ताल ३ जमनापद ॥ भई भेंट अचानक
आइ ॥ अस्थाई ॥ हों अपने ग्रहतें चली जमुना

बे·रा वे उनते चले चारन गाइ ॥ इत्येतना ॥ निरखत रू
७२ प ठगोरी लागी उनको डगर भर चल्यो न जाइ ॥ छी
त स्वामी गिरिधरन कृपा करि मोतन चितये मुसि
क्याइ ॥ रागिनी बंगाली ताल २ जसुना
पद ॥ उठहु नंद कुमार भयो भिनुसार जगावत
नंदरानी ॥ इत्यस्थाई ॥ झारी के जल वदन पखारे

खन कहि कहि सारंग पानी ॥ इत्येतरा ॥ माखन
रोटी ग्रह मधु मेवा जो भावै सो लीजै प्रानी ॥ सूर
श्याम खावत निरखि जसोदा मनही मनहि सिहानी०
रागिनी बंगाली ताल जमुनापद ॥ भोर भए
भोगी रस विलसि भये ठाढे ॥ इति अस्थाई ॥ जागी
जामिनी जगाय भामिनी संग संग समाय स्याम सि

बे॰गा॰
७२
72

थल उरनि उरन देन आलिंगन गाढे ॥ अंतरा ॥
चूमत रस मत मगन ह्वैहू डग परत पगन छिन
छिन छिन चौप चोजनि मोज मनोजनि बाढे ॥ अ
तिर समै रसिक राय शोभा बरनी न जाय बर विहार
निदासिल डाय प्रेम रंग रंगि काढे ॥ रागिनी बे
गाली ताल जमनापद ॥ चर्चरी आतही कि

गोर जोरि कैज खेलनी । इत्यस्थाई ॥ श्रेग श्रेग ग
गान रंग गौर श्याम रूप रासि मदन केलि रबत सि
पु कुल जैलनी । इत्यन्तरा ॥ तरनि नैदनी सतीर
गावत पिय संगाकीर विगुणा मरुत सेवधीर श्रमज
श्रेतु जैलनी । वरविहार गानी स्वन धरा दिवाजानी
विरल विपुल बारनेक भजा कंठमेलनी ॥ रागि

वे·रा·
७३

73

री बंगाली ताल ३ जमनापद ॥ मोहन चेबरवारे
वार । इनास्थाई । यहफिरहेमझना हलनिरवारन वा
र ॥ इस्पेनरा ॥ रतिमानी संग नेद नेद केब्रुटे
वेद केशु की टूटे हार ॥ निमिके जागे दोऊनैनना उ
रफिरहे वलति जोवन मदभार ॥ हरश्याम सेवा
यह स्राव देखन रीझै वारंवार ॥ इतिश्रामोवाः ॥

रागिनी वंगाली ताल १ षट्पदी जमुनाजीके ॥
जैजै श्री सूरजा कलिंद नंदनी ॥ इत्यस्थाई ॥ गुल्म
लता तरु सुवास कुंज कुसुम मोदमत गुंजत अलि
सुभग पुलिन वायु मंदनी ॥ इत्यंतरा ॥ हरि समान
धर्म सील कांति सजल जलद नील कटिनितंब भे
दन तिन गति उतंगनी ॥ सिकता जनु मुक्ता फल के

बं॰रा॰ कण जन भज तरंगा कमलनि उपहार लेत पियावर
७४ ण बंदनी ॥ श्रीगोपेंद्र गोपी संग श्रम जलकण सि
74 लंबदा अति तरंगनी सुरसिक रसहु फंदनी ॥ कीन
स्वामी गिरिवरधर नंद नंदन आनंद जमुने जन हरि
न हरन दुखनि कंदनी ॥ रागिनी बंगाली ताल ४
षट्पदी जमुनाजी के ॥ अति मेजल जल प्रवाह म

नोरमा सखो अवगाह नवनव मुनिराजन मुनि नरनि
नंदनी ॥ इन्पस्याई ॥ श्याम बरन झलक रूप लाल
लहरि बर अनूप सेवत संतन मनोज बामंदनी ॥
इन्तंतरा ॥ कुमुद कंज बन विकास मंडित दिस दि
स सुवास कूजित कलहंस कोक मधुर छंदनी ॥
प्रफुलित अरविंद पुंज कोकिल सुकमार गुंज सेवि

वे॰रा॰ न अलिभँरा पुंज विविद बेदनी ॥ नारद सुक सनक

७५ व्यास यावत मुनिकरत आस वाहन हैं अलिनवास

75 सकल दुख निकंदनी । नाम लेत कटत पाप अरघि

किन्नर मुनि कलाप करत जाप परमानंद आनंद

कंदनी ॥ रागिनी बंगाली ताल चंचल षट्पदी॰

आये लाल डगमगात प्रात ॥ इत्यस्थाई ॥ भाल

महावर पीक कपोलनि अधरन मसि नयननि अरसा
न ॥ इत्यंतरा ॥ मोती माल लसे उर बिनु गुण सिथ
लित पाग सिथिल सब गात । बोलत बोल अटपटे मो
हन नागर सौंह करत न लजात । ओढे नील बसन
तम आये बैज बेंद हरि माऊलबोन । सोवे बोल
निवारे ब्रजपति माया कर आये परभात ॥ ॥

बं॰ रा॰
७६
76

रागिनी बंगाली ताल १ षट्पदी जमनाजीका
झूमत रतनारे नयन सकल निसा जागे ॥ इतिश्र
स्थाई ॥ लटपटी स्वेदस पाग श्रम कनकी झलक
बीच पीकछाप जगा कपोल अधरनि मसि लागे ॥
अंतरा ॥ बिनु गुण माल बनी बीच नखनि रेखठ
नी पलटि परे बसन पीट के कण सोहागे ॥ बाकब

न्यो चंदन वनमाल लगयो चंदनसो ड्यामगात वरण
यरन प्रिया प्रेम पायो ॥ वचन रचन कियो सोऊ वे
गा आये और सोऊ वलि वलिया वदन कमल शोभि
न अनुरागे ॥ जाय वसो वगरही धाम विलसे जहां
सकल जाम गोविंद प्रभु वलिहारी करजोरे माथे ॥
रागिनी वंगाली ताल ३ षट्पदी जमुनाजी का ॥

वे॰रा॰ ७७

77

आये भोर उनींदे श्याम । इति अस्थाई । सकल निसा
जागे प्यारी संग हारे हो रतिरण संग्राम । इत्यंतरा ॥
सिथलित पाग भाल पर जावक हिये विराजत वि
न गुण माल ॥ कुंमकुम तिलक अलक पर सेउर श्र
मरा पीक सोहत दोउ गाल ॥ कंकन पीठ गड्यो उर
नख छत जनु ह्यन साज हैं जको वेद ॥ छीन खामी

गिरिधरन भले तुम मोहि खिजावत हो नंदनंद ॥
रागिनी वंगाली ताल ३ षट्पदी जमनाजी का ॥
कमल नयन हरि करो कलेवा ॥ इति ध्रस्थाई ॥ माख
न रोटी सद्य जम्यो दधि भांति भांति की मेवा । खारि
क दाख चिरौंजी किसमिस उज्जल गरी बदाम । सफ
री सेव छोहार सिंघारे जे खरबूजा नाम ‖ अरु मेवा बहु

बे॰रा॰ भांति भांति के षटरस के मिष्टान ॥ सूरदास प्रभु क
७८ रत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥ रागिनी बेगाली
78 ताल ४ षट्पदी जमुनाजीके ॥ भोर भए निर
खत हरिको मुख प्रमुदित जसुमति हरषित नंद
इति अस्थाई ॥ दिनकर किरनि कमल जन विक
सित उर प्रति प्रति उपजत आनंद ॥ इति अंतरा ॥

वदन उघारि जगावत जननी जगाउ मेरे आनंदकंद-
मानहु मथि सुर सिंधु फेन फटि दयौ दिखाई पूरन
चंद ॥ जाको ईश शेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति
श्रुति छंद ॥ सोई गोपाल व्है गोकुल भीतर सरसो प्र
कटे परमानंद ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥
षट्पदी जमुनाजीके ॥ नहीं जाउ जहां रैनि हुते ॥

वे·रा·
७९
79

इति अस्थाई ॥ काहेको उराव करत नंद नंदन मिटे
न अेक उर बिन्ह जाने ॥ इत्यंतरा ॥ बिन गुन हार म
नो हर उर पर परम बनर हिय लाइ सने ॥ बिथुरी
अलक अटपटे भूषन लटे काम उर बीबडते ॥ द
शन दागन खैरख छबीली भामिनि भवन भाव
भरते ॥ सुर श्याम दे बिथुरति शोभा लोचन ललित

उनींदऊते ॥ रागिनी बेंगाली ताल २ षट्पदी ॥
लालन आयेरी रैनि गवाई ॥ इति ध्रुवस्थाई ॥ निसिभ
ई छीन बोले तमचुर खग ग्वालिन नवहि हेसी मस्त
काई ॥ इत्यंतरा ॥ अरुन किरनि मखव पंकज विस
सिन मधुप लियो सोदर समजाई ॥ चंद मलीन भयो
दिन मणि ते कुमुद गये सबही कुंभिलाई ॥ चारि

के॰ग॰ जाम जगत बीते मोहिं तुम्ह बिन मोको कछु न सो
८ हाई ॥ सूरश्याम या दरस परस बिन सब निशा गई
80 मेरी नींद हेराई ॥ रागिनी बेंगाली ताल ३ घट
पटी जमुनाजीके ॥ जानत हो जैसे गुणनि भरे हौं
रतिश्रमस्याई ॥ काहेको दुराव करत मनमोहन सो
ई पे कहो तुम जहां फिरे हौ ॥ रंगीतरा निशि जागत

निज भवनन भावत आलस वंत सब अंकथरे हैं ॥
वंदन तिलक मिल्यो कहु वंदन काम कुटिल कच
उर उघरे हैं ॥ तुम अति कुसल किसोर नंदसुत क
हो कौनके चित हरे हैं ॥ औविकही जियजानि सू
र प्रभ सौंह करन को होत खरे हैं ॥ रागिनी
बंगाली ताल ३ षट्पदी जमनाजीका ॥

81

हाहा हो पिय बात कहो ॥ अति अरस्याई ॥ आप क
छु जिय नरक गहत हौ तो तुम सौं हो मौन गहो ॥
अन्यतरा ॥ कहा चूक हमको पिय लागे हसि रहे
हौ काहे जू ॥ तबही तैं बैस हौ ठाढे मोननको न
हि चाहे जू ॥ अब हमरो अपराध क्षमोगे कृपा क
रो मन लेबोलो जू ॥ हरषपाम अब न जौ निदरई रुठी

हृदयकी खोलौंज्‌ ।। रागिनी वेंगाली ताल २
षट्पदी जमनाजीकी ।। जाइ नहीं कहा सोवत हौ
इतिब्रसपाई ।। जासंग रैनि विहातन जानी भोर भये
तेहि सोवत हौ ।। इनसंगवा ।। औरनि को छिन जग
वीननहै हम निरहचीने नागर हौ ।। घूमत नयन ज
म्हात बारही रतिसंग्राम उजागरहौ ।। मैखब कहति

बे॰रा॰
८२
82

तुम्हारे छिनकी नाहीके गहरु सोयरहौ ॥ सूरश्याम
ऐसी त्रियकौंहै बहुरस बारी बिनुनलहौ ॥ रागिनी
बेगाली ताल ३ षट्पदी जमनाजीके ॥ हमही
पर पिय हसेहौ ॥ इति अस्थाई ॥ बोलत नहीं मूक
कैसैं ह्वैरहे अति रंग हीन कछुसेहौ ॥ इति अंतरा ॥
नव निरखत औरहि छिन बिन बिनु कियौं कहूं तुम

लसैहो ॥ नवहसि वदन मिलत आजहि कछु और
भये निहु हसैहो ॥ उग मगात पग उतरहि परत है
विन चंचल उतरहसैहो ॥ सूरदास प्रभु सोचि भाषि
गये प्रिय संग अवलाम्हसे हो ॥ रागिनी बेगाली
ताल ४ जमनाके षट्पदी ॥ श्यामा संग श्याम
नवन राम संग शगनि ववत शशि अवेउ मंडल ह

बे·रा·
८३

83

सि शरद जामिनी ॥ इति अस्थाई ॥ नवनि नवन कु
ल मण्डल अकलसमि नवज धनीत त्रिविध पवन ना
प वदन काम कामिनी ॥ अन्तरा चरण चलित
वकु वलित ललितगान कलित तान मान ख्याव नि
धान निरखेति भामिनी ॥ वर सुगंध रंग नाल म
णि मन्देश विंगजाल लाल सुधर श्रीधर गजराज

गामिनी । रिझै पतिहिं गति दिखाय लेत कंवर के
हलाय श्याम घटा माझ मनहु दुरति दामिनी ॥
नैन सै नम्र विलास मंदहास हाव निवास हसि मु
नि बनि बोलत जै आस स्वामिनी ॥ रागिनी वेरा
ली ताल ३ षट्पदी जमुनाजी का ॥ नैन श्या
म सरव लूटत है ॥ शंपुत्रस्याई यही बात मोको

बे॰रा॰ ८४ 84

नहि भावे हमते काहू छूटत है ॥ अंतरा ॥ महाप्र
भु निधि पाइ अचानक आपुहि सबै भुरावत है ॥ अप
ने है ताते वह कहियत अपाम इनहि भरमावत है ॥
छिन छिन प्रति छवि सागर लूटत वरजे भोंहें तानत
है ॥ सूरदास जी देत कछू एक कहौ कहा अनुमान
त है ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी जमुनाके

हरिके मन वारे कान्ह खोलो प्यारे पलके ॥ रूपग्रस्था

ई ॥ सीश मुकुट लटा छुटी ग्रौर छुटी ग्रलके ॥ रूपे

नैना ॥ सुरनर मुनि हार डाडे दरस कारन किलके॰

नासिका के मोती सोहै बीच लाल ललके ॥ कटिपी

तांबर मुरली कर श्रवण कुंडल झलके ॥ सूरदास

मदन मोहन दरस देहो भलके ॥ रागिनी बंगाली

वं॰ ना॰ ना॰ २ षटूपदी ॥ राम कृस्न कहिए निसि भोर इन्ह सखाई
८५ वे अवध ईश धनुष धरे वे ब्रज जीवन माखन चोर ॥
85 इन्हें नग ॥ उनके छत्र चंवर सिंघासन भरत शत्रुघ
न लछमण जोर ॥ उनके लकुट पीतांबर गायन के
संग नंद किशोर ॥ उन सागर में सिला तराई उन रा
खो गिर नख की कोर ॥ नंद दास प्रभु सब तज
भजिये जैसे निरखत चंद चकोर ॥ इतिश्रीभोगः ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ अष्टपदी जमुनाजी के ॥
श्रीजमुना देवी कौन भलाई ॥ इति अस्थाई ॥ नाम
रूप गुणले हरि जूको मारी अपनी चाल चलाई ॥
इत्यंतरा ॥ उनवस देश कियो भानाको तुमहिं
परसि कोउ उतहि न जाई ॥ जेतन तजत नीर तु
मरे ते तात किरनि मैं गैल लगाई ॥ भक्ति वधूको

बे॰रा॰
८६
86

करि हृनते प्रथमनिको ले थानि मिलाई ॥ श्राइन षप
म श्रान उजल करि नान नपत श्राइसीतल नाई ॥ ज
ल कोकुल करि श्रनल श्रचन को यह सनिके कोउ कौ
पतिश्राई ॥ निशदिन पह पान पतितन को तदपि यादा
पर प्रभु मनभाई ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥
जमनाके अष्टपदी ॥ नहीं जाऊ जहां निसावस ॥

रतिग्रस्याई ॥ जानति हो पिय चतुर शिरोमणि नाग
र जागर नागरसे ॥ अंतरा ॥ तुमत हो मानो पिय
उर नागीनव विलास श्रम सेजउसे ॥ श्याम उरस्थ
ल परनख सोभित गगन उडज जन इंडलसे ॥ का
जल अधर प्रकट देखियत है नागवेलि रंग निपट
लसे ॥ लटपटि पाग महा वरके रंग मानिनि पगाप

वे॰ रा॰
८७

र सीस बसे ॥ विगलित केश मर्‌वाजी माला पीठ्हि
वलय के चिन्ह बसे ॥ सूरदास प्रभु त्रिया वचन सु
नि नागर नगधर नेके हसे ॥ रागिनी बेगाली ना
ल २ अष्टपदी जमनाजी के ॥ क्यों सुंदरन ह्वें
प्रगट भये ॥ इतिप्रम्याई ॥ कहत है नयन निशा के
जागे मानो मरमिज अरुणनये ॥ इंपंनरा ॥ जावक

भाल नागर सलोचन मसिरेखा अधरनि जोटये ॥
वलया पीठ नितंब चरण मणि विन गुण केंद हारव
नये ॥ भुजनाटंक ग्रीव सोर चंदन विक्र कपोल दसन
ग्रसये ॥ आलिंगन चंदन ऊब चविंन मानो हैशशि
उर उदये ॥ चरण सिथिल अहचल उगामणी चूमन
चायल समर समये ॥ सुरसखी कैसे मन माने सुंदर

बं·रा·
८८
88

श्याम कुटिल मगाये ।। रागिनी बंगाली ताल ३
जमना के अष्टपदी ।। नंद द्वार एक जोगी आयो सी
गी नाद बजायो ।। इति अस्थाई ।। शीश जटा शशिब
दन सोहायी अरुन नयन छबि छायो ।। इंतरा ।।
रोवत खीजत कृष्ण सांवरो रहत नहीं हुलरायो ।।
लियो उठाय गोद नंद रानी द्वारे जाय दिखायो ।।

अलख अलख करि लियो गोदमें वदन चूम उर लायो ॥
श्रवण लागि कछु मंत्र सुनायो हसि बालक किलका
यो ॥ चिरजीवो सुत महर तिहारो हौं जोगी सुख पायो ॥
सूरदास रम चल्यो रावलो शंकर नाम बतायो ॥ ॥
रागिनी बंगाली ताल ३ जमनाजीके अष्टपदी ॥
राम वदन अभिराम काम पति नीरज्य राज बिराजे ॥

बे·रा·
८९
89

इति ग्रस्याई ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतल वर प्रेम अक्ष
य वट भ्राजे ॥ छंपतरा ॥ श्याम वरन पद पीठ अरुण
तलल सन विसदनख श्रेणी ॥ मनो रवि सुता सार
दा सुर सरि मिलि चलि ललित त्रिवेणी ॥ अंकुश कुलि
श कमल ध्वज रेखा भँवर तरंग विलासा ॥ मज्जन सु
र सज्जन मुनि वरजन मुदित मनोहर वासा ॥ विन वि

राग लप जोग जोग व्रत विन नन नीवृथा भागे ॥ सोस

व सुलभ दास तुलसी प्रभु पद प्रयोग अनुरागे ॥

रागिनी वेंगाली ताल ८ ॥ श्रीकृष्ण नाम रसनार

ट सोई धन्य कलिमें । इमस्याई । जाके पदपंकज की रे

णुकी वलिमें । इत्यनरा । सोई सुकृत सोई पुनीतसो

ई कुलवंता । जाके निश दिना रहे कृष्ण नाम चिंता ॥

बे॰रा॰
५॰

१०

जोग जग्य तीरथ व्रत कृस्न नाम माहीं ॥ विना
कृस्न नाम कलि उधार और नाहीं ॥ सब साधन
को सार कृस्न कबहू न विसरिये ॥ कृस्न नाम
लै लै भव सागर को तरिये ॥ श्री गोवर्द्धन धर
न प्रभु परम मंगल कारी ॥ उधरे जन सूर दा
स ताकी बलि हारी ॥ इति श्री भोग: ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल ४ जमुनाकेपद ॥ जागि
ये गोपाल लाल प्रगट भयो हंसमाल मिटि गयो अंध
कार उठो जननि मुखदेखाई ॥ इतिअस्थाई ॥ मुकु
लित भै कमल जाल कुमुद वृन्दवन विहाल मेटहु
जंजाल त्रिविध ताप तननसाई ॥ इत्यन्तरा ॥ ठाढे
सब सखा द्वार कहत नंद के कुमार टेरत हैं बार बार

वे· रा·
५८

९१

आइये कन्हाई ॥ गैयनि भई बड़ी बार भरि भरि पय

थन निभार बछ गगा माकर पुकार तुम विन जदु

राई ॥ तातैं यह अटक परी दोहन काज सौं हेकारी

उठि आवहु कौंन हरी बोलत बलभाई ॥ सुखेते प

टउठ किवारि देद वदन देउवारि जसमति बलिहा

रि वारि लोचन सुखदाई ॥ येन दुहन चले धाय रोहि

१ ज· २४

ऐसी कौं लई बुलाय दोहनी मोहिं दै मगाई नवही
लै आई ॥ बछरा दियो थन लगाय डरत वैठिके
बन्हाय हंसत नंदराय नहीं माना दोउ आई ॥ दोह
नी कह्यो हथ थार सिखवत नंद वार वार बहुछबि
नहिं वार पार नंदद्वार बधाई ॥ तब हलधर कह्यो
सुनाय धेनु वन चलो लिवाय मेवा लीन्हें मगाय

वे·रा· विविध रस मिठाई ॥ जेंवत बलराम श्याम संतन के
९२ स्वाद धाम धेन काज नहि विश्राम जसदा जल ल्याई॰
92 श्याम राम मुख पखारि ग्वाल बाल लये हंकारि ज
मुना तट मन विचारि गाइन हेकराई ॥ संग वेणु
नाद करत मुरली सुर मधुर धरत ब्रजांगन मन हर
त ग्वाल गावत सुघराई ॥ वृंदावन चरत जाय धेन

चरनि लगि अघाय श्याम हरष पाय निरखि सूरज
बलिजाई ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ जमुना
केपट ॥ जै गोविंद माधो मुकुंद हरि ॥ इतिश्रस्थाई
कृपासिंधु कल्यान केसअरि ॥ अंतरा ॥ कृपानि
पाल केशव कमलापति । कुल कमल लोचन श्रग
तिनगति । रामचंद राजीव नयन बर ॥ शरण सा

बे॰ग॰ ॥ श्रीपति सारंगधर । बनमाली बामन बिट्ठल ब
२३ ल । बासुदेव बासी ब्रजमंडल । खर दूषण त्रिसि
93 रा सिर खंडन । चरण चिन्ह देऊक भवमंडन । बकी
दवन बक बदन बिदारन । बरुण बिषाद नंदनिस्ता
रन । ऋषि मख त्रान ताडका तारक । बन बसि ता
त बचन प्रति पालक । गोकुल पति गिरिधर गुण

सागर। गोपीरवन रासरति नागर। रघुपति प्रबल
पिनाकवि भंजन। जग हित जनकसुता मनरंजन।
काली दमनके सिकर पातन। अघ अरिष्ट धेनुक
प्रल घातन। करुणा मय कपि कुल हित कारी॥
बालि विरोध कपट मृग हारी। ग्राम गोप कन्या व्र
त हरन। द्विज नारी दरसन उरवे चरन। रावण कुं

वे·रा· भकरण सिर छेदन । नर वर स्नानपक सर भेदन ॥

५४ शोवहूड बाराहर सेचारन ॥ शाक्र कहै मेरी रक्षकार

९५ न । उजर क्षण गीथ क्षनकारी ॥ दरसन दै सबरी उ

धारी ॥ जेपद सदा शंभु हितकारी ॥ जेपद परसि स

र सरी गारी । जेपद रमा हृदै नहि टारी ॥ जिनि पदने

निजे भवन नियारी ॥ जेपद वृंदावनहि विहारी ॥

१ जा २८

जेपद पांडव ग्रह पग धारी ॥ जिनि पद शकटा सु
र संचारी ॥ जेपद अहिफन फन प्रतिधारी ॥ जेप
द भक्तन के सुखकारी ॥ जिनि पद रज गौतम ति
यनारी ॥ सूरदास सुरजाचत वेद पद ॥ करहु कृ
पा अपने जन पर सद ॥ ॥ रागिनी बेंगाली ता
ल १ जमनापद ॥ कृस्न नाम भावे मोहि कृस्न

वै॰रा॰
५५
95

नाम भावै । वलिहारी ताकी जैपी कृस्न नाम गावै॰
वसुधा को सार कृस्न मेरे मनके अधार । कृस्न अव
ग मंगल रूप कृस्न सव विचार । नैनन को मूल
कृस्न हरन सकल खेल कृस्न व्रज समद्र को वार ।
कृस्न शिवको आधार मेरे रसना को भाग्य कृस्न ध्या
न पार । मनको सुहाग कृस्न रसना नैनन को नैत्र

कृष्ण सब मंगल सुवार । यह राम राय कहत कृष्ण
नाही जपत भगवान कृष्ण बारंबार । हरे हरे हरे
कृष्ण कृष्ण कृष्ण राम राम राम । नारायण नाराय
ण वासुदेव वासुदेव गिरिवरधर गिरिवरधर श्या
म श्याम । दीनबंधु दीनबंधु वैकुंठधाम ॥ होत
प्रात बड धनीन लेत हरिको नाम । रामोदर रामो

वे.रा. ९८

96

दर चक्रपानि नरहरि हरि नरहरि हरि मुर रिपु मुरा
री ॥ मधु सूदन मधु सूदन सांवरो वनवारी ॥ जमु
ना के नीरे नीरे वृन्दावन धाम । सूर श्याम रटन व
हुत राधावर नाम । भोर उठ सुमरन करो होय सब
ही काम । वंसी वट जमुना तट सुंदर घन श्याम ॥
रागिनी वंगाली ताल १ जमुनापद ॥ वासुरी

१. नं. ३५

बजाई आज रंग सौं मुरारी ॥ इति अस्थाई ॥ शिव स
माधि भूलि गई मुनि मन की नारी ॥ इअंतरा ॥
भेद अनंत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी ॥ सुनतही
आनंद भयो लगी है करारी ॥ रंभा सब ताल चुकी
भूली नृत्य कारी ॥ जमुना जल उलट बह्यो सुध
ना सम्हारी ॥ श्रीबृंदावन बंसी बजी तीन लोक

बे॰ रा॰ प्यारी । ग्वाल बाल मगन भये ब्रज की सब नारी ॥
५८ सुंदर श्याम मोहनी मूरति नटवर वपुधारी ॥
97 सूर किशोर मदन मोहन चरणौं बलिहारी ॥
रागिनी बेंगाली ताल ३ जमुनापद ॥ देखो
री यह कैसा बालक रानि यशोमति जायाहै ॥
रतिगुस्याई ॥ सुंदर बरन कमल दल लोचन दे

खेन वेद वजायाहै । इत्येनवा । हरण ब्रह्म अलख अ
विनाशी प्रगट नंदघर आयाहै । मोर मुकुट पीतांवर
सोहै केसर तिलक लगायाहै । कानन कुंडल गल
विच माला कोटि भानु छवि छायाहै । शंख चक्र ग
दा पद्म विराजे चत्रभुज रूप वनायाहै । परमेश्वर पु
रुषोत्तम स्वामी जगमति सृत कहलायाहै । सब

वे॰रा॰
९८
98

कछ्छ वाराह श्री वामन राम रूप दरसाया है । खंभफा
रि प्रगटे नरहरि वधुजन प्रहलाद छुडाया है । परसरा
म बुध निःकलंक होय भुवका भार मिटाया है ।। का
ली मर्दन कंश निकंदन गोपी नाथ कहाया है । मधुसू
दन माधो मकुंद प्रभु भक्त वछल पद पाया है । दामो
दर गिर धर गोपाल हरि त्रिभुवन पति मन भाया है ।।

सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सेषसहस मुख गा
यौहै । सुर नर मुनि के ध्यानन आवत अद्भुत जाकी
मायाहै । सो परे ब्रह्म प्रगट होय ब्रजमें लूट लूट दधि
खायौहै । परमानंद कुल मन मोहन बदन कमल वि
न लायाहै ॥ रागिनी बंगाली ताल १ जमनापद-
मे जोगी जस यारे गावौमे जोगी जस गाया । तेरे सुत

वै·रा·
११

के दरसन कारन में काशी में पाया । इति श्रुस्थाई । परे
ब्रह्म पुरान पुरुषोत्तम सकल लोक जा माया ॥ अल
११ ख निरंजन देखन कारन सकल लोक फिर आया ॥
धन तेरो भाग जसोदा रानी जिन ऐसा सुत जाया ॥
गनन बडे छोटे मन भूलो अलख रूप धर आया । जो
भावे सो लीजो रावल करो आपनी दाया । देह अशी

र.ज. ३२

श मैरे बालक को अविचल वाकी काया । नामै लेहीं पा
ट पटेंवर नामैं केचन माया । सब देहु मेरे बालक
को यह मेरे गुरु ने लखाया । कर जोरे विनवे नंदरानी
सुन जोगिन कै राया । सब देखन नहि देहो गाव
ल बालक जान उराया । काला पीला गोर रूप है वा
ढेवर ओढाया । कहु शयन की दृष्टि लगो कहुं बाल

वे॰ग १०

100

क ज्ञान दिढाया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो
कौं ज्ञान दिढाया ॥ तीन लोक का साहब मेरा तेरे भव
न छिपाया ॥ हंस लाल को त्याई जमदा कर प्रबल सु
र छुडाया ॥ कर पसार वरनन रज लीनी सींगी नाद ब
जाया ॥ अलख अलख कर पाय कुं पड़े हंस बालक कि
लकाया । पांव वेर पर कर्मी करके अति आनंद बढाया॰

1. ज. 33

हरिकी लीला हरमन अटको चित नही चलत चलाया·
अखिल ब्रह्मंडके नायक कहिये नंदद्वारहि प्रगटाया·
इंद्र वेद सुरज सारद सनकादिक पारन पाया ॥ लाग
श्रवन मंत्र दिजो सुनाया हंसि बालक मुसकाया ॥
कौन देशके जोगी हो तुम कौन नाम धराया ॥ क
हां वास यह कहत जसोदा सुन जोगिनके राया ॥

10

नमही ब्रह्मा नमंही विस्नु नमही ईश कहाया । न
म विश्वंभर नम जग पालक नमही करत सहाया॰
सूर श्याम कहे सुनो जसोदा शंकर नाम बनाया ॥
इति श्री भोगः ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ ॥ अविगत आदि अनंत
अनूपम अलष अकष अविनासी ॥ सदा ब्रह्म प्रगट
पुरुषोतम नित निज लोक विलासी १॥ जहं बृंदावन आ
दि अजर जहां कुंजलता विस्तार ॥ तहं बिहरत प्रियप्रीत
म दोऊ निगम भृंग गुंजार ।२॥ रतन जटित कालिंदी
के तट अति पुनीत जहं नीर ॥ सारस हंस चकोर मोर

वे॰ग॰
१०२
102

खग कूजत कोकिल कीर ३ जहां गोवर्द्धन परवत म
निसै सघन कंदरा सार ॥ गोपिन मंडल मध्य विराजत
निशि दिन करत विहार ४ खेलत खेलत चितमें आ
ई सृष्टि करन विस्तार ॥ अपने आपकरि प्रगट कि
योहै हरी पुरुष अवतार ५ माया कियो क्षोभ बहु वि
धि करि काल पुरुष के अंग ॥ राजस तामस सात्विक

त्रिगुन प्रकृति पुरुष को संग ६ कीन्हें तत्व प्रगट तेही
छिन सबै अष्ट अरु बीश ॥ तिनके नाम कहत कबि
सूरजी निर्गुण सब के ईश ७ पृथिवी अप तेज वायु
नभसंज्ञा शब्द परस अरु गंध ॥ रस और रूप और म
न बुधि चित अहंकार मति संघ ८ पान अपान ब्यान
उदान और कहीयत प्रान समान ॥ नब्लक धनजय

ञ्जन देवदत्त और पौंड्रक शंखेसुमान ४ राजस तामस
सात्विक तीनौं जीव ब्रह्म सख याम । अठाईस तत्त य
ह वारेयन सो कवि स्वरजी नाम ९ नाभी कमल ना
रायण की सो वेद गरभ अवतार ॥ नाभी कमलमें व
उत ही भटक्यो तऊन पयोपार ११ तब आज्ञा भई य
ह रवकी तभ करो परम तप आप ॥ तब ब्रह्मा तप कि

यो वर्षसत हूर भये सब पाप १२ नव दर्शन दीनों करुणा
कर परम धाम निज लोक ॥ ताको दर्शन देखि भयो अ
जसम बानन सोक १३ जहा आदि निज लोक महा निधि
रमा सहस संजुत ॥ अंदोलन झूलत करुणा निधि रमा
सहचर अनिहत १४ अस्तुति करि विविधि नाना करि
परम सरुप आनंद ॥ जै जै जै ध्वनि गीत गायकै पठत

बे॰रा॰ १०४

है नाना छंद १५ ब्रह्मा करी नाथ चतुरानन करौं सृष्टि
विस्तार ॥ होरी खेलन की विधिनी की रचना रचो प्रथ
104 म १६ चौदह लोक करौं नाना विधि रचि बैकुंठ पाताल ॥
नाना रचना रची विधाता होरी खेल रसाल १७ ॥ दश
हौं पुत्र भये ब्रह्मा के जिन सेच्यो संसार ॥ स्वायंभू मनु
प्रगट नवकीन्हे प्रकृ सत रूपा नार १८ भव की रक्षा कर ३

नज्ञ कारन धरि वराह अवतार ॥ पाछें कपिल रूप ह
रि धारयों कीनों सांख्य विचार २४ दीनो ज्ञान आप मा
ता को कीन्हों भव निस्तार ॥ आठो लोक पाल नव की
ये अपने अपने अधिकार २५ नेत्र अग्नि निज मम करत वरु
न और सूरज चंद्र यह नाम ॥ स्रष्टा कुबेर पशुपति करि
यन जहां शंकर को धाम २६ सत्यलोक जन लोक लोक

वे॰ग॰
१०५
105

तप और महर निजलोक ॥ जहराजत ध्रुवराज महा
निधि निशिदिन रहत अशोक २२ जननी आज्ञापाय
चले वनपाच वरष सुकमार ॥ ताको आप कृपाहरि
कीनी यरि आये अवतार २३ पाछे पृथुको रूपहरि
लीन्हों नानारस दुहिकाढे ॥ तापर रचना रचीविधा
ता बहुविधि जतन न बाढे २४ रवि नौखंड दीप सातो ४१

मिलि कीनो होरि समाज ॥ बन उपबन परबनबङ्क
फूले सबै बसंत कोसाज २५ दानव देवलगे आपसमै
कीन्हों युद्ध प्रकार ॥ विविध शस्त्र छूटत पिचकारी
चलत रुधिर की धार २६ दीनै मार असुर हरिनै नव दे
वन दीनौंराज ॥ एकनकौं फगवा ऐश्वासन एक पता
लकी साज २७ विद्याधर गंधर्व अपसरा गान करत सब

बे॰रा॰ १०६

106

राधे ॥ चारन सिद्ध पठन विरदावल लै फगुवा हाव

गावैं ४८ चंद्रलोक दीनौं शशिको नव फगुवा मैं हरि

श्राप ॥ सवन खगको राजा दीन्हौं शशि मंडल मैं छाप

४९ मंगल बुद्ध शुक्र अरु शनि अरु राहु केतु ग्रह जानि·

रवि अरु शशि सब होनको फगुवा दीनौं चतुर सुजाति

५० अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान·

पाताल श्रौर रसातल मिल साते भवन प्रमान ३१ संकर
घनको धामपर मकविनहो राजत निजवीर ॥ शेषनाग
नाकेनर हारम वसत महा धनधीर ३२ ईलावर्त श्रौर
किंपुरुषा कुरु श्रौर हरिवर्ष केतुमाल ॥ हिरनमैं र
मनक भद्रासन भरतखंड नारवपाल ३३ साते दीप
कहे सुकमुनिने सोई कहत अब सूर । जंबुलक्षकोव

वे॰रा॰ साय कहं अरु क्रिपा प्रभाकर भरपूर ३४ अपनैं अपनैं स्थान
१०८ पर तब फुरवा दियो बुझाय ॥ जब जब हरि मायानै दान
107 व प्रगट भये हैं आप ३५ तब तब धरि अवतार कृपाल नै
कीनौं असुर संघार ॥ सो चौवीस रूप निज कहियत
वरनन करत विचार ३६ प्रथम किये स्वायंभू मनरूप
अजआज्ञा यह दीनी ॥ भूपर जाय राजतम करिहौ स्
६

हि विस्तार यह कीनी ३७ स्वायंभू मनु अरु सतरूपा न
रत भूमि पर आये ॥ जलमैं मगन भये भव देखै फिर
अज पै फिर आये ३८ अज सौं आय कही सबही विधि भ
वइव देखियत नाहीं ॥ तब अति ध्यान कियो श्रीपति
को केशव भये सहाई ३९ आई छींक नाकतैं प्रगटे सू
कर अति लघुरूप ॥ देखत गज से होय गये हैं कीन्हौं सूर

वे.रा.
१०८

108

न स्वरूप ४० जैजै करत सकल सुरनर मुनि जलमैं कि
यो प्रवेश ॥ जायपनाल बाट गहि लीनी धरनी रमा न
रेश ४१ ते भव कमल कुसुम की नाई बलै मनहु गजरा
ज ॥ कछु डर नाहिन जियमैं उपजत अति आनंद समा
ज ४२ जोग साधु सनकादिक वारीगये हरिके निजलो
क ॥ कीन्हे क्रोध मने जब कीन्हे दियो श्राप अति सोक ४३

जै अरु विजय असुर योनिन को भये तीन अवतार ॥
तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दितकी कोषि मझार
४४ प्रथम भयो हरनाछ महाबल जिन जीते लोकपा
ल ॥ नारदसोंप गयो सूकर पै देखो रूप विकराल
४५ सहस वरष लौं जल में जूझे किये दनुज संहार ·
पाछे आय भूमि को थापी किये यज्ञ विस्तार ॥ ४६

स्वायंभू मनरूप ततयः कहियत तीन प्रमान ॥ आकु
ती देवहूती औरु परसूती ववर सुजान ४७ परसूती दई
दक्ष प्रजापति तिन की सती सुयान ॥ सोदीनी महादे
व देवको अति आनन्द सुजान ४८ तज्यो देह अभिमा
न पायकै बहुर दक्ष गेह जाई ॥ पाति अन यभ जवजा
न्यो बहुरो सइविहाई ॥ ४९ ॥ आकुती दई रुचि प्रजा

पति भये यज्ञ अवतार ।। इंद्रासन बैठे सुख विलसत हर
किये भव भार ५० देवहूती कर्दम को दीनी तिन कीन्हो
तप भारी ।। बिंदु सरोवर आये माधव किये गरुड असवा
री ५१ दियो वरदान सृष्टि करिवे को अस्तुति करी प्रमा
न ।। मेरो अंस अवतार होयगो कहि भये अंतर ध्यान ५२
पाछैं ऋषि निज तप मन लायो कीनो प्रगट विमान ।।

वे. गा.
११
110

तामैं वेद सकल जग देख्यौ कह्यानैं सब वेदान ।। ५३
पाछै कपिल रूप हरि प्रगटे दरशन करि मुनि गाय ।।
कीनें त्याग गये वनको तब ब्रह्म परम पद पाय ५४
पाछै विविध ज्ञान जननी को दीनौं कपिल दृढाय ।।
सांख्य जोग अरु ज्ञान भक्ति दृढ वरनी विविध वनाय ५५
जलको रूप तरनकैं ताड वह [illegible] हरिकै रूप समाय ।।

चले मगन द्वै भक्त ध्यान कर गंगा सागर न्हाय ५६
अजहूँलो राजत नीरधि कै तट करत सांख्य विस्तार ॥
सांख्यायन से बहुत महा मुनि सेवत चरन सुचार ५७
ऐसे पुत्र भये ब्रह्मा के तिन कीन्ही तपजाय ॥ आये ती
न देवता के ढिग ब्रह्मा शिव हरि राय ५८ तब उन सों
कह्यो सुनत तुमहीं से तीनों प्रगटे आय ॥ अज शाशि प्रेम

रुद्र उरवासी दत्तात्रेय हरि राय ५९ अनसूया के गर्भ प्र
गट ह्वै कियो जोग आराधि ॥ यम अरु नेम प्रमान प्र
त्याहार धारन ध्यान समाधि ६० आसन कमल सिद्ध जो
ग कर प्रगट कला जगदीस ॥ दीनौ भोग सहस्र नृप
को बहु करुना नित जगदीस ६१ कीनै गुरु चौबीस
सीष लै यदु को दीनो ज्ञान ॥ पाते जलसे मुनि पद से

बन करत सदा प्रभु ध्यान ६२ जब सृष्टिन पर कृपा को
नी ज्ञान कला बिस्तार ॥ सनक सनंदन और सनातन
चारो सनत कुमार ६३ उनको कह्यो सृष्टि नाना बिधरच
ना करो बनाय ॥ उन नहि मान्यो नव चतुरानन खो
जै कोय उपाय ६४ शंकर प्रगट भये भृकुटीनै करीं
सृष्टि निर्मान ॥ भूत प्रेत बैताल रचे बहु दौरे बिधि कों

वै·रा·
११२

स्रोन ६५ पूरनकरौं कह्यो चतुरानन हरषि महा उरवे
दैन ॥ तव शंकर तपस्या कौ निकसै तिनै कमल द
लैनैन ६६ सुरन दियाउ भई धरम की तिनके हरि
अवतार ॥ नारायण भये प्रगट बहु तिन मैं सो भव भा
र ६७ सहस कवच एक असुर सै हौ रव बहुरि कियो त
प भारी ॥ सोच परेव सुरपति कौ तव उन पठई अप्स

रा नारी ६८ बहुत भांति उन कियो परम कुल नप मैं

उनके काज ॥ कछु नहीं चली ब्रह्मा नारायण खरे

समाधि निय लाज ६९ एक उरवसी हृदय उपजाइ दई

शक्रको नाय ॥ ताको देख देख जीवन है अजहुं इंद्र सु

खपाय ७० स्वायंभूके उतिय प्रियव्रतान पाद मति धीर

तिनके ध्रुव बालक जो जाये और उत्तम गंभीर ॥ ७१ ॥

न्रपके पास गये गोदीमै बैठनको सुकुमार ॥ तब ल
घु मान कस्यो तब वैठे जब मेरे गुवनार ७२ सुन कटु
वचन गये मानापै तब उन ज्ञान दृढायो ॥ हरिकी
भक्तिकरौं सुखनीकै जो चाहो सुख पायो ७३ पांच
वरष के निवास चले तब मधुवन पहुंचे आय ॥ वि
च नारद मुनि तन्त्र बतायो जपै मंत्र चित लाय ॥ ७४

कछु दिन पत्र भक्ष करि वीते कछु दिन लीनो पानी ॥
कछु दिन पवन कियो अन आसन रोक्यो स्वास पर जानी
७५ सहस्र तप जव कियो राज सुत तव कांप्यो सुरलोक ॥
त्राहि त्राहि हरिसों सव भाष्यो दूर करौ सव शोक ॥७६
तव हरि कह्यो कोऊ जिन डरपो अवहि तुरत मैं जैहों·
वालक ध्रुव वन करत सहस्र तप ताहि तुरत फल दै

हो ७७ इतनी कहत गरुड पर चढिकै तुरतहि मधुव
न आये ॥ केतु कपोल परम बालककै वानी प्रगट क
राये ७८ अस्तुति करी बहुत ध्रुव सब विध मन प्रसन्न
भय आप ॥ दिये राज भूमंडलकौ सब विध थिरकीर
थाप ७९ हरि बैकुंठ सिधारे पुन ध्रुव आये अपने धाम-
कीनौ राज तीसषट बरषन कीन्हे भक्तन काम ८० ॥ १३

यत प्रबल गाफै ध्रुव मंडल तिन मारयो निज ध्यान ॥
तिनके काज ग्रेश हरि प्रगटे ध्रुव जगत विख्यान ८१
बहुत बरषलौं राज कियो ध्रुव फिर आये निज लोक ॥
सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा नीसोक ८२ सनका
दिक प्रब्रिये वनत नन ब्रह्मजीवकौं वीव ॥ प्रगट हे
स वप्र धरयो जगत गरज्यौं पैनीर समीव ८३ यह ध्रुव

मंडल कौं रस काप्यो भांति भांति निज हाथ ॥
यहि विध रूप कियो जग आनंद अखिल लोक कै ना
थ ८४ प्रिय व्रजवेश धरेव हरि निज वपु ऋषभ देव य
ह नाम ॥ कीन्हे काज सकल भक्तन को अंग अंग अ
भिराम ८५ कीनो गर्व महा मघवा नें वरषा वरषो ना
ह ॥ तब हरि आप मेघ ह्वै वरषे करी परम साव खार

८६ ज्ञान उपदेश कियो ऋषभनको ब्रह्मावर्त मझार ·
पाछे करि सन्यास जग्यानमें विचरे परम उदार ८७
प्राप्तो सिद्ध भई सन्कादि जब करीन ऐसी कार ॥ जै
जै जै श्री ऋषभ देव मुनि परब्रह्म अवतार ॥ ८८
ब्रह्म सभामें कियौ यज्ञ जब करन वेद उच्चार ॥
प्रगट भये हयग्रीव महानिध परंब्रह्म अवतार ८९

बे॰ग॰ ११६ चार वेद ले गयो शंखा सुर जलमैं रह्यो छिपाय ॥ ध
116 रि हयग्रीव रूप हरि मारिव लीने वेद छुडाय ९० सत्य
व्रत राजा रघुवंसी प्रथम भये मनु वंस ॥ कीनो तप
बहु भांति परम रुच प्रगट भये हरि अंस ९१ धरि
लघु रूप मीनकौ मोहन आये उनके पानि ॥ तब
उन जलमैं डारि दिये फिर तब बोले हरि बानि ९२

जलके बीच डारि जिनमो कोबडे मछ डरलागा ॥ य
ह कहि बृहत रूप हरि धारेव सत्य व्रत के भाग ५३
सतवे दिवस होयगी परलय आवेगी एक नाव ॥ ता
मे बैठ सत द्विज ऋक तुम करो भजन ममभाव ५४ इ
तनौ कहि हरि रूप देखत हीं भये जो अंतर ध्यान ॥
साते दिवस भयो जब परलय तब कीन्हो रुपज्ञान ५५

बं. रा.
११८

117

सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लिये द्विज साथ ॥
बैठे नाव ध्यान हरिको करि दरशन दीनों नाथ ९६
बासुकि नाग आय नहे ततछन बांधी दृढ़ कर नाव ॥
पूछ्यो ज्ञान कह्यो सो सब हरि नव विधान ९७ बहु
न काललों विचरे जलमें नव हरि भये सुशांति ॥
बीत्यो प्रलय विविध नानाकार सृष्टि रची बहु भांति ९८

यह हरि भक्त रूप जब लीन्हों कियो चरित विस्तार ॥ जै
जैजै श्री मीन महा वपु जैजै जगत अधार ९९ छीर समुद्र
छीर मथन कीनो निधि चौदह रतन निकार ॥ परवत
पीठ धरिव हरि नीके लियो कूर्म अवतार १०० हरिन क
शिप अति प्रबल दनुज है कीन्हों तप परचंड ॥ तब
उन वर दीन्हों चतुरानन कीन्हों अमर अखंड १०१ जब

वे·रा
११८
118

तप गयो तबहिं मघवाने सबसंपति गहि लीन्ही ।। ग
है जब कच कामिनि राजा की तब नारद सिखदीन्ही ९२
याके गर्भ बसत है हरि जन सुन सुरपति यह बात ।।
तब तज दई आप लै आये निज आश्रम विख्यात ९३ ।।
तिन प्रति ज्ञान कथा है मन सों करत रहत मुनि राज ।।
सुनि प्रल्हाद प्रसन्न कोपि में अति आनंद समाज ।।९४

तापाछे तप कियो असुर बहु फिर देख्यो निज धाम ॥
तब नारद मुनि दई कथा भूले आयो है गाम १०५ पाछें
लोक पाल सब जीते सुरपति दियो उठाय ॥ बरुन कु
बेर अगनि यम मारुत स्ववस कियो लिएमाय १०६
हाहाकार भयो सुर लोकन गये सबै अज पास ॥ तब
अज ध्यान कियो माधव को बानी भई अकास ॥ १०७

वै·रा
११९
119

सकल लोक यह देत असुर दुख तऊन करो संचार ॥ जब
मेरे जनको दुख देहै छिनहिं में डारों मार ९८ जब प्र
ल्हाद प्रगट याके गृह पांच वर्षके भयेहै ॥ आदर बहु
कीन्हों राजाने पढन विप्र गृह गयेहै ९९ जब वह विप्र
पढावे कछु कछु सबनके चित धरि राखे ॥ जब वह जा
य तबहिं सब छिन सों राम राम सब भाखे ॥ १०० ॥ लरि

१२

का और पढ़न शाला में तिनहि कवन उपदेस ॥ हरि
को भजन करो सबही मिल और जगत सुख लेस ॥११॥
यहि विधि कर उपदेस सबनको किये भजन रसलीन।
संडामर्क जो पढ़न लाग्यो तब यह असुर दीन ॥१२॥ राम
कृष्ण अवतार मनोहर भक्तन के हितकाज ॥ सोई सार
जगत में कहियत सुनो देव द्विजराज ॥१३॥ यही बात

जगतमैं नीकी सोई पढत हम आज ॥ जबही विश
कह्यो जो अक्षर सो पुत्र पढत बिन काज ॥ १४ तब
हि अक्षर प्रहलाद बुलाये लिये गोद भरि अंक ॥ क
ह्यो पुत्र तुम कहा पढो हो सकल कह्यो निसंक ॥ १५
श्रवण कीर्तन स्मरन पादरत अरचन वंदन दास ॥
साख्य और आत्मा नैवेदन प्रेम लक्षनाजास ॥ १६

सुनो पिता हो यही पढ़ोऊं और बात नहि जानूं ॥ इन
तें और मोहि जो कहियत सो कबहूं नहिं मानूं ११७ ॥
दीनो पटक भूप धरनी पै कह्यो विप्र सों खीझ ॥ रे मूढ़
शठ तू कहा पढ़ायो कैसें देउ तोहि रीझ ११८ जो यह
मेरो बैरी कहियत ताको नाम पढ़ायो ॥ देहु गिराय
याहि परवत तें छिनगत जीव करायो ११९ अरु याहि

वै· रा·
१२१

खेलन दीनों डार सैलते भूपर पुन जल भीतर डारो ॥
डार अग्निमैं शस्त्रन मारो नाना भांति प्रहारो १० ॥
तऊ न घात भई अंगन की जहँ तहँ राम बचायो ॥
तब नृप आप शस्त्र करगहकै बहुत हि त्रास दिखायो
११। कहाँ है राम कहाँ वह तेरो यो कहि गरजन कीनी ॥
घट घट जल थल व्योम धरनिमैं व्यापक यह धुनि ली

नी १२२ नवलै खड्ग खंभमे मारो भयो शब्द सुनि भारी·
प्रगट भये नरहरि वपु धरि हरि कट कट करि उच्चारी ।
१२३ पकर लियो छिन मांऊ असुर बल डरो नखेन
बिदारी ॥ रुधिर पान करि आंत माल धरि जैजै शब्द
उच्चारी १२४ मारो दैत्य दुष्ट एक छिन मैं जे नरसिंह
वपुधारे ॥ प्रह्लाद पन दृष्टि करत सुरनर मुनि भये भक्त

रावचारे २५ रमा निकट नहि आवत हरिके ऐसो व
श हरि पायो ॥ अज सनकादि देव नारद मुनि जानन
रूप निहारो २६ अपनी अपनी स्तुति करके सब
हिन यहै सुनायो ॥ गन्धर्व अरु विद्याधर चारन
विमल यश गायो २७ नव प्रह्लाद आय हरिपद
सो शीश नाय यह भाष्यो ॥ जै जै जै जगदीस जगन

चरन कमल अनुरागा २४ क्रिपा करि दीन्हो करुना
निधि अटल भक्त थिर राज ॥ अंतर ध्यान भये हरि
तहँते सफल भये सब काज २५ नारद रूप जगत उ
धारन विचरन लोकन मा ॥ करि उपदेश ज्ञान हरि
भक्तहि अरु वैराग दृढाय २६ स्वायंभू मनु रूपा
दोऊ कहियत है अवतार ॥ जग को धर्म प्रचार किये

भव भक्तकसि आचार ।२७ करुना कर जल निधि ने
प्रगटे सुधा कलस लै हाथ ॥ आशु वेद विस्तारन का
रण सकल ब्रह्मंड के नाथ ।२८ तजी उह वटे जो भव
पर लियो कूर्म अवतार ॥ परसु राम ह्वै कै द्विज थापे
हर कियो भव भार ।२९ रघु कुल वंश वनेर चूडाम
नि पुरुषोत्तम अवतार ॥ दशरथ के गृह जन्म लि

यो हरि रूपदास सुकुमार ॥५०॥ रावण कुंभकरन प्रस
राधिप बड़े सकल जग माहे ॥ सबहिन लोकपाल
उन जीते कोऊ बांच्यो नाहे ॥५१॥ सकल देव मिल जा
य प्रकारे चतुरानन के पास ॥ लै शिव संग चले च
तुरानन क्षीर सिंधु सुखवास ॥५२॥ असतुति करि ब
हु भांति जगाये तब जागे निज नाथ ॥ आज्ञा दई

जाय कपिञ्जलमें प्रगटो सब स्वर साय १४३ तब ब्रह्मा
सबहिन सों भाष्यो सोई सब स्वर कीन्हो ॥ सातों द्वीप
जाय कपिञ्जलकमें आय जन्म सब लीन्हो १४४ अपने मं
धा आप हरि प्रगटे पुरुषोत्तम निजरूप । नारायण भु
व भार हरो है अति आनंद स्वरूप १४५ वासुदेव यों कह
त वेदमें है इरन अवतार ॥ शेष सहस मुख रटत

निरंतर नछत्र पावत पार ४६९ सहस्र वर्षलो ध्यान
कियो शिव राम चरित सुखसार । अब गाइन करि
कै सब देख्यो नछत्र पायो पार ४७० विनी समाधि
सनी नव रक्ख्यो कह्यो परम गुरु ईश ॥ काको ध्यान
करत उर अंतर को स्मरण जगदीस ४७१ तव शिव क
ह्यो राम प्रभु गोविंद परम इष्ट क मेरे । सहस्र वर्ष

वै.रा.
१२६
126

लौं ध्यान करतहौं रामकृष्ण सबकेरे ॥ १४९ तामे
राम समाधि करी अब सहस बर्षलों वाम ॥ प्रति
आनंद मगन मेरो मन अंग अंग हरन काम १५०
दाया करि मोको यह कहिये अमर होउं जेहि भांति ·
मोहि नारद मुनि तत्व बतायो तातें जिय अकुलाति
१५१ तब महदेव कृपा करिकै यह चरित कियो विस्ता

र ॥ सो ब्रह्मांड पुराण व्यास मुनि कियो वदन उचार

१५२ मुनि वालमीक कृपा तातें रुषि राम मंत्र फल

पायो । उलटो नाम जपत ब्रह्म वीनो पुन उपदेश क

रायो १५३ राम चरित वरनन के कारण वालमीक

अवतार । तीनों लोक भये परि पूरण राम चरित सु

विस्तार १५४ शत कोटी रामायण कीनो तऊन लीनो

वे.रा.
१२८
127

पार ॥ कह्यो वशिष्ठ मुनि रामचंद्र सों रामायण उच्चा
र १५५ काग भुसुंड गरुड सों भाष्यो रामचरित्र प्रव
नार । सकल वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचंद्र जस
सार १५६ कछु संछेप सूर अब बरनत लघुमति इव
वल वाल । यह रसना पावन के कारन मेंटन भव
जंजाल १५७ तीनो रूह संग लै प्रगटे पुरुषोत्तम श्री २६

राम । संकरषन पद्युम्न लछिमण भरत महासुख
धाम १५८ शत्रुहनहि मन करह कहीयत है चतुर व्यूह
निज रूप । रामचंद्र प्रगटे जब गृह में हरषे कोसल
भूप १५९ शुभ नक्षत्र नवमी जु परम दिन लगन
शुद्ध शुभ वार । प्रगट भये दशरथ गृह पूरन चतुर्व्यू
ह अवतार १६० अति फूले दशरथ मनहीं मन कौ

बे॰ रा॰ १२८ 128

मिल्या सुखपायो । सौमित्रा कैकइ मन आनंद यह सब
दिन सुनजायो ९१ गुरु वशिष्ठ नारद मुनि ज्ञानी ज
न्मपत्रिका कीनी ॥ रामचंद्र विख्यात नाम यह सु
रमुनि की सुधि लीनी ९२ देतदान नृपराज द्वि
जन को सुरभी हेम अपार । सब सुंदरि मिलि मं
गल गावत कंचन कलश उदार ९३ आये देव श्री

र मुनिजन सबदे असीस हरषे भारी । अपने अपने धा
म चले सब परम मोद अधिकारी ५४ मन वांछित
फल सबहिन पायो भयो सबन आनंद । बाल रूप ह्वै
के दशरथ सुत करत केल स्वछंद ५५ छुद्रघंटन चलन
कनक आंगन मैं कौसल्या छवि देखत ।। नीलन लि
न नन पीत झगुलिया घन दामिन दुति पेखत ५६

बे॰ रा॰
१२९
129

कबहुंक माखन रोटी लेकै खेल करत पुन मांगत ॥ म
खेवत जननी समझावत आयके द पुन लागत १६७
काग भुसुंड दरश को आये पांच वर्ष लो देखे । खेलि
करी आदर पायो जन्म सफल करि लेखे १६८ क्रिपा
करि निजधाम पठायो अपनो रूप दिखाय । वाके
आश्रम को उ बसत है माया लगत न नाय १६९ ॥

२२

प्रातकाल उठ जननि जगावत उठो मेरे बारे राम ॥

उठि बैठे देत बनलै आई करी न्हावोरी स्याम ८०। बा

रो भ्रात मिल करत कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल

आचमन आरती करकै फिर कीन्हों असनान ८१

करत शृंगार चार भइया मिल शोभा बरनि न जाई ।

चित्र विचित्र सीस चौतनिया इंद्रधनुक छवि छाई ८२

अलकावलि मुक्तावलि गूंथी डोर सुरंग विराजै ॥
मनहुं सुरसरी धार सरसुती यमुना मध्य विराजै १३
तिलक भालपर परम मनोहर गोरोचन को दीनो ॥
मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदय सो कीनो
१४ खंजन नैन बीच नासापुट राजत यह अनुहार ॥
खंजन जुग मनो लरत लराई कीर बुझावत रार १५

नाशाके वेसरमें मोती बरन बिराजत चार ॥ मनो
जीव शनि शुक्र एकह्वै बाढे रविके द्वार ७९ कुंडल
ललित कपोल विराजत झलकत आभा गंड ॥ इंदी
वर पर मनो देखियत रवि की किरन प्रचंड ८० ॥
अरुण अधर दमकत दसनावलि चारु चिबुक मुस
कान । अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिम बीज

बे॰रा॰ २३१ 137

समान २८ कैठ सिरी विच पदक विराजत बहुमणि

मझाझार। दहिनावर्त देत झवनावे सकल नखन

बडवार २९ रतन जडित केकन बाजूबंद नगन मु

द्रिका सोहै। उरउर मन मदन विटपतक विकच दे

ख मन मोहै ३० कटि किंकिणि रुनझुन धनि तन

की हेस करत किलकारी॥ नूपुर धुनि परम ललित प

नैया उपमा कौन विचारी १८१ भूषन वसन आदि स
व रव रव माता लाड लडावै । रामचंद्रकी देख माधुरी
दरपन देख दिखावै १८२ निज प्रति विंब विलोक स
करमै हंसत राम सावरास । तैसेई लक्षमन भरत श
त्रुहन खेलत डोलत पास १८३ दशरथ रायन्हाय
भोजनको वैठे अपने धाम । लागे वेगि राम लक्षम

वे·रा· न को सुनिआये सषिधाम ॥ बैठे संग बाबा के बा
१३२ रो भैया जेवन लागे ॥ दशरथ राय आउ जेंवत हैं अ
132
ति आनंद अनुरागे ।१८५। लघु लघु ग्रास राम सषे
मेलत आउ पिता सषि मेलत । बालकेलि को बिस
द परम सुष सुष समुद्र नृपफेलत १८६ दाल
भात घृत कढ़ी सलोनी अरु नाना पकवान ॥
३१

आरोगत नृप चारि उठ मिलि अति आनंद निधान
१८७ अचवन कर उन जल अचवायो जब नृप बीरा
लीनो । राम लछण अरु भरत शत्रुहन सबनहिन
अचवन कीनो १८८ बीरा खाय चले खेलन को मि
लि कै चारो वीर । सखा संग सब मिले बरा बर आ
ये सरजू तीर १८९ नीर चलावन सिखे सिखावन

वे॰रा॰ यर निसान देखरावत ॥ कबङ्केक साधु अश्रवधि
१३३
133
आश्रुन नानाभांति नचावत ॥५॥ कबङ्के बारआान
मिलि अश्रगाया जात परम सुखपावत । हरिन आ
दि बङ्जंतु किये बध निज सुरलोक पठावत ॥६॥
यहि विधि बन उपबन बङ्क्रीडा करी राम सुख
दाई । बालमीक मुनिकही कृपाकर कछुएक सुर
३३

जोगाई ५२ भई सांझ जननी टेरत है कहां गये दो
ऊ भाई । भूख लगी है है लालन को लाओ बेग बुला
ई ५३ इतने सांझ चार भइया मिल आये अपने धाम
राखें बन आरती उतारत कौसल्या अभिराम ५४
सौमित्रा कैकई सुख पावत बहु बिध लाड लडावत ।
मधुर मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेवावत ५५

बै.रा. बारो भातन अमित जानिके जननी तब पौढाये ॥
१३४ बोपत बरण जननि अप अपनी कछुक मधुर सुरगा
137 ये ११६ आई नींद राम सुख पायो दिन को श्रम बिस
रायो । जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठ लगायो
११७ सिखा मित्र बडे मुनि कहियत यज्ञ करत निज
धाम । मारिच और सुबाहु महासुर बिघन करत ३३

दिन याम १९८ परब्रह्म अवतार जानकैं आये नृपके पा
स ॥ दशरथ राय बहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास
१९९ भोजन कर जबहीं जु बिराजे तब भाष्यो मुनिराय०
यज्ञ सुफल कीजे मेरो अब दीजै राम पठाय २०० तब
नृप कह्यो रामहैं बालक मोको आज्ञा कीजे ॥ तब
द्विज कह्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजै २०१ ॥

गुरुवसिष्ठ सब विध समझाये राम लषन संग दीन्हे ।
मारगमें अहिल्या उद्धारी नावक निज पद छीनें २-२
विश्वामित्र सिखोई बहुविधि विद्या धनुष प्रकार ॥
मारगमें ताड़का जब आई वदन पसार २-३ छिनमें राम
सरन सौं मारी नेक न लागी बार ॥ दीन्ही मुक्ति जानि
निज महिमा आये ऋषिके द्वार २-४ कीन्हे विश्वयज्ञ ३८

परि सुरन असुर विघ्न को आये । अगिनवान कर दह्न
न कियो है एक समद्र पठाये २०५ जनक विदेह कि
योज स्वयंबर बहु न्रप विप्र बुलाये ॥ तोरन धनुष
देव त्र्यंबक की काहू जनन न पाये २०६ विश्वामित्र मु
नि वेग बुलाये सकल सिष्य लै संग ॥ राम लछ
ण संग लिये आपने चले प्रेम रस रंग २०७ जहं तहं

वै·रा·
१३६
136

उझक झरोखा झांकत जनक नगर की नार । चित
वनि कृपाराम सब लोकन दीनौं सुख अपार ३८
कियो सनमान विदेह नृपतिने उपवन बासो कीनौं·
देखन राम चले निज पुरको सुख सखिन को दीनौं
३९ सब पुर देखि धनुष पुन देख्यो देखे महल सुरंगा·
अद्भुत नगर विदेह विलोकत सुख पायो सब अंगा ४०·

कहत नारि सब जनक नगर की बिधि सो गोद पसा
र सीता जू को बर यह चहिये है जोरी सुकुमार २११
अपने धाम फिर नव दोऊ आये जान भई कछु साँझ
कर डंडवत परसि पद ऋषि कै बैठे उपवन माँझ २१२
संध्या भई कृत्य निज कर कै कीनो ऋषि परनाम ॥
पौढे जाय चरन सेवा हित करके अति बिसराम २१३

ब्रह्म मुहूरत भयो सवेरो जागे दोऊ भाई ॥ कर परना
म देव गुरु द्विजको जल मुस्नान कराई २१४ आये
भूपदेश देशन के जुरी सभा अति भारी । तहां बुला
ये सकल द्विजनको जनक सभा मंझारी २१५ कौ
शिक मुनि तहं ऋषिसौं पधारे लिये शिष्य संग मान-
वले नित्य आन्हिक सब कर द्विज उर आनंद न समान ९

दोनौं भ्रात संग मैलीन्हे आये राज दुआर ॥ जहे बैठे
सब भूप आपसो गाढ्यो गरभ अपार २१७ अपने आप
ने भुजबल तोलत तोरन धनुष उदार । कछु नहि च
लत खिसाने भये सब रहे वदन पखिहार २१८ सीता
कहत सहेलिन सो इनि यही करत रघुनंद । तव उ
न कह्यो सकल सखा सागार सोये परमानंद २१९ ॥

बार बार जिय सोच करत हैं विधि सों बचन उचारी ॥
मन क्रम बचन यहै वर दीजो मांगत गोद पसारी २२०
एक बार खर देवी सृजत भयो दरस सखि मोह ॥ ता
दिन तैं छिन कलन परत है सत्य कहत हो तोह २२१
सब नृप पचे धनुष नहि टूट्यो तब विदेह दुख पायो ॥
क्रोध बचन करि सब सें बोले लजी की उन रहायो २२२

यह सुनि लक्ष्मण भये क्रोध युत विषम वचन यौं बो
ले । सूरज वंश नृपति भूतल पर जाके बल बिन तोले
२२३ कितक बात यह धनुष रुद्रको सकल विखकर
लैहौं । आज्ञा पाय देव रघुपति की कनक मोऊ हठ
गेहौं २२४ सबके मनकौं देख अंदेसो सीता आरत
जानी ।। रामचंद्र तबही अकुलाने लीन्हौं सारंग पा

वे॰ रा॰
१३५

137

नी २२५ छिनमें करले केउ चढायो देखत है सब भूप-

उठिव तोर प्रचान शब्द भयो जैसें काल को रूप २२६

सबही दिशा भई धुनि आनंद परशुराम हानि पायो ॥

परह समहार सिष्य संगलै के छिनही मैं तहं आयो

२२७ जै जै कार भयो जगती पर जनक राज प्रति हरषे।

सुरविमान सब कौतक भूले जे धुन सुमनन वाषे २२८

३८

जनकराज नवविप्र पठाये वेगवरात बुलाई ॥ द
शरथ राज वाजि गजलैकै सबही सौज बनाई २२९
देखन चली बरात विपुल धनलै कै जोर मनुज नरि
पार । शोभा सिंधु कहत नहि आवै वरनन करत उचा
र २३- गुरु वशिष्ठ मुनि लगन दियो शुभ शुभ नक्ष
त्र शुभवार । आये जान नृपति मनमाने कीन्हो अति

बे॰ रा॰
१५॰
140

मनहार २३१ व्याह केल हुलस बरनन कीन्हों मुनि वा
ल्मीक अपार । सो सुख सूर कह्यो वह कीरत जगत न
करी विस्तार २३२ वेद शास्त्र मथ करी व्याह विधसो
ई कीन्ही रघुराय । राम लछन अरु भरत शत्रुहन
चार वेदिये विवाय २३३ होम हवन द्विज पूजा गन
पति सूरज शक्र महेश । दीनों दान बहुत विप्रन ३६

को राजा मिथिल नरेश । २३४ खेलत यहि विधि ॥
उन सब भयो परम आनंद कों बहुत दायजो दीनों ॥
भये विदा दशरथ नृप नृप सों गवन अवध पुर कीनों
२३५ भृगुपति आय जानि जब रघुपति मिले धाय
शिर नाय । दशरथ राय विनय बहु कीन्हों जिय में
अति उर पाय २३६ खेलत यहि विधि हरि होरी हो ॥

वे॰ रा॰ १४१

141

तव मुनि कह्यो धनुषकौं तोरेव कहद परम गुरु मेरे ॥
रामचंद्र स्रवण अरु षोनम नेक नयन जब हेरे २३७
लीन्हौ अंस रैव भृगु पति कौं अपने रूप समायो ॥
कयो जाय तप शैल महेंद्र पै मुनि मुनि वर शिर नायो
२३८ अति आनंद अयोध्या आये कियो नगर स्रृंगार ।
कदली षंभ चौक मोतिन के बांधी वंदनवार २३९

80

कियो प्रवेश राज भवननमें रामचंद्र सुखरास ।। अ
द्भुत भवन विराजत रतनन सूरज कोटि प्रकास ४.
द्वादश वरष विराजै बालक फिर भूभार हरी । कैकेई
के वचन प्रमाण किये नृप तब यह काज करी २४।
वचन सुनत नृप आज्ञा कीनो देव उपाय करो । राम
चंद्र पितु आज्ञा मानी जिय में वचन धरो ।। २४ ।।

वे·रा·
१४२

142

यह सुभाव उतारन रघुपति बहुत अछिन सारव देन·
वनीवास को चले सिया संग साखि निधि राजिव नैन
२४४ मारग में हरि कृपा करी है परम भक्त एक ज्ञान
तहंते गये जु चित्रकूट को जहां मुनिन की स्थान ४४
वालमीक मुनि वसत निरंतर राममंत्र उचार । ता
कोफल यह आज भयो मोहि दरस दियो कुमार २४५

पूजा करति गणपताय भवन मैं रामचंद्र परनाम । कि
यो विविध विध पूजा कर के ऋषि चरनन शिरनाम
२४६ बहुत दिवस लो बसे जगत गुरु चित्रकूट निज
धाम ॥ किये सनाथ बहुत मुनि कुलको बड़ वि
य सर काम ॥ भरत जान जिय मैं रघुपति को दुः
२४७
सह परम वियोग । आये धाय संग सब लेके पुर

बासी नटह लोग २४८ बिन दशरथ सब चले नरनहीं कौ
मल पुरके बासी । आये रामचंद्र भाव देख्यो सबकी सि
ही उदासी २४९ रामचंद्र भनि सब जन देखे पिता न दे
खन पाये ॥ पूछी बात कह्यौ सब काहू मन बहु बिय
बिलखाये २५० वेदरीति करि रघुपति सब बिधि म
रजादा अनसार । बहुत भांति सब बिध समझाये भ

रन करी मनहार २५१ गुरुवशिष्ठ मुनि कह्यो भरत सों
राम ब्रह्म अवतार । वनमें जाय बहुत मुनि तारे हर
कैं भुव भार २५२ पुन निज विश्वरूप जो अपनो सों
हरि जाय देखायो ॥ आज्ञा पाय चले निज पुरको थ
महि गीत समझायो २५३ कछु दिन बसे ज्यु चित्र
कूटमें रामचंद्र महज्ञान ॥ तहांते चले दंडकावन

वै॰ रा॰ १४४ को भाव निधि सांवल गात २५४ मारग मैं बहु मुनि
१४७ जन तारे ग्रह विराध रिपु मारे । वंदन कर सरभंगा
महा मुनि अपने दोष निवारे २५५ दरशन दियो सु
तक्षण गौतम पंचवटी पग धारे ॥ तहां उह सूर्पन
खा नारी करि बिन नाक उपारे २५६ यह सुनि खर
र प्रबल दल आये छिन मराम संघारे । कीन्हे काज
४३

सकल सुर मुनि के भव के भार उतारे २५७ मुनि अग

स्त आश्रम जगाये हरि वज्र दिय सज्जा कीन्ही ॥ दिव्य

वसन दीने जब मुनि ने फिर यह आज्ञा दीन्ही २५८

दश कंधर को वेगसवारी हर करो भवभार ॥ लोपा

मुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनक कुमार २५९ सूर्पन

खा जब जाय पुकारी नाक कान ले हान ॥ रावन

क्रोध कियो अतिभारी अधर फरक अति गात २६०
गयो मारीच आश्रम हित वही बाँनै बहु समझायो॰
तब मारीच कह्यो दशकंधर बिनती बहुत करायो
२६१ रामचंद्र अवतार कहत हैं मुनि नारद मुनि पास॰
प्रगट भये निश्चर मारन को मुनि बहु भयो उदास॰
२६२ कर गहि खड्ग नीच बध करिहो सुनन मारीच

उर मार्यो ॥ रामचंद्र के हाथ मरेंगो परम प्रहषफ
ल जान्यो २६३ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता
विनती कीन्ही ॥ रामचंद्र कर सायक लैके मारन
की विध कीन्ही २६४ मारीच धनुष बान लेनाको
लक्षमन नाम पुकारेव । लक्षमन नाम स्रवनन
महा आये श्रीमत उर विचारेव २६५ यति के कपट

वै॰रा॰ १७६ 176

भेष भिक्षुक को दशकंधर तहां आयो । हरि लीन्हीं छिन
में माया करि आपने रथ बैठायो २६६ चल्यो भाज गोमायु
जेन जैसें लेके हरी को भाग । इतने रामचंद्र तहां आये
परम पुरुष बडभाग २६७ जब माया सीता नहि देखी
जिय में भये उदास । पूछन लगे राम द्रुम गन सो बङ्
न बल्ली ह खग राम २६८ मारग में जटायु खग देख्यो वि 84

कल भयो तन हीन । विनती करी राममैं नासो बहुत
लराई कीन २६९ जब तन तज्यो गध्र रघुपतिनव ब
हुत करम पियकीनो २७० जाम्यो सबोराय दशरथ
को अपनो निजगति दीनो २७० मारगामें कमंध रि
पु मारेव सुरपति काज सवारेव । पंपासर हरि
तुरत पधारे जलको दोष निवारेव २७१ शिवरीपरम

बे·रा·
१४७
147

भक्त रघुपति की बहुत दिनन की दासी । ताके फल
आये रघुपति दरस भक्त प्रकासी २७२ दीन मुक्ति
निज पुर की ताको तब रघुपति चले आगे ॥ सीता
सीता बिलपत डोलत परम बिरह सों पागे २७३ ॥
खेलत यहि बिध हरि होरी हो ॥ रबिनंदन जब मिले
राम को प्रभु भेटे हनुमान ॥ अपनी बात कही उन ह

तिसो बालि बडो बलवान २७४ सप्तताल बेधन हरि
कीन्हौं बाली तिनकैं मारो ॥ दीनों राज राम रवि
नंदन सब विधि काम सवारो २७५ सप्तदीपके कपि
दल आये जेते सेन अति भारी । सीता की सुध लेन
चले कपि ढूंढत बिपिन मझारी २७६ जल निध
तीर गये सब कपि मिल सुनि संपाति कि बानी ॥

लंक बसत सीता बिन बनमें सब बानर यह जानी २७७
रामचरण कर सुमिरन मनमें चले पवन सुत धाय ०
राम प्रताप बिघन सब मेटे पैठे नगर सुखपाय २७८
प बिलछु रूप प्रवेश कियो कपि लंका नगर मझार ०
राम भक्त निज जान बिभीषन भेटे हरि येकबार २७९
तब बाने सब भेद बतायो देखी कपि सब लंक । राम

चरण धरि हृदय मुदित मन विचरत फिरत निशंक
२८० जाय असोक वाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह ॥
कर दंडवत बहुत विनती कर राम मुद्रिका दीन्ह २८१
सब संदेश कह्यो कपि सिय प्रति सुनि हिय में परिताषो·
राम संदेश कह्यो तब सीता जो बूझो सो भाष्यो २८२ ॥
लागी भूख चले उपवन में नाना विध फल खाये ॥

बे॰ रा॰ १४९

149

विटप उखार उजार् विपिनको सबहिनको हरसाये
२८३ सुनि प्रकार निशिचर बहु आये कूदि सबनि से
मारे ॥ इंद्रजीत बल निय जब आयो ब्रह्म अस्त्र उन
डारे २८४ तासों बंधे दशानन देखन चले पवन सु
त धीर ॥ रावन बहुत ज्ञान समझायौ कथ्य कथ्य क
था गंभीर ॥ चले लुडाय छिनक में नवही जारदई

४८

सब लेक ॥ कहिवलै राज वनकौ जयकर ज्यौं म्रग
राजनि सेक २८६ आये नीर समुद्र मिले कपि मिले
आय जहं राम ॥ सुनि सुनि कथा श्रवन सीताकी छ
लकित अति अभिराम २८७ करि कपि कटक चले
लंकाकी छिनमैं बांध्यौ सेत ॥ उतर गये पहुंचे
लंकापै विजय ध्वजा संकेत २८८ पटये वालि ऊमा

वे॰रा॰ १५॰ 150

र बिनय कर समुझाये बहु बार । बिन नहिं धरी काल
बस जाको फिर आये सुकुमार २२८ असरन सरन उदा
र कल्पतरु रामचंद्र रनधीर । रिपुभ्राता जाको जब वि
भीषन निस्चर जटिल सरीरँ राख्यो सरन लंकेश कि
यो भनि जब निस्चर सब मारे । मायाकरी बहुत नाना
विध सबको राम निवारे २२९ कुंभकर घन इंद्रजीत ४९

यह महा बली बलसार । छिन में लिये सोष सबनि ब
रज्यौं हनी बली अपार २५२ कियो प्रसाद शोभना कर
कै राज बिभीषणहि दीनौं । पुनि मंदोदरि अबल आश दै
अभयदान सब कीनौं २५३ समाधान सुरगन को कर
कै अमृत मेघ बरषायो । कृपा दृष्टि अवलोक कर
कै हत कपि कटक जिआयो २५४ निस्तार किये सक

वे·रा·
१५८

151

सब मायव तोनै जिये न कोय ॥ निरभय कियो लंके

स विभीषण राम लषन नृप दोय २२५ सीता मिली

बहुत सुख पायो धरो नृप निज मायो ॥ पुष्पक या

न वैठके नीके चले भवन सुख छायो २२६ चले पव

न सुत विप्र नृप धरि भरतहि दैन वधाई ॥ जानि

हूत रघुपति को प्रभ दिन भरत मिले नव धाई ॥२७

सजत नगर सबहित सावमान्यो जहं तहं नैं वलेषा
ई ॥ रामचंद्र पुनि मिले भरत सौं आनंद उरन समाई ९८
कियो प्रवेश अयोध्यामैं नव घर घर वजत वधाई ॥ मं
गल कलश धराये द्वारे वंदन वार वंधाई २९९ राजभ
वन मैं राम पधारे गुरु वशिष्ट दरसायो ॥ शीस न
वाय वहुत पूजाकर सुरज वेस वठायो ३०० ॥

बै॰ रा॰ १५२

152

सभा थान सब दिन को कीन्हों जो दशमन को आयो ॥
कौसल्या कैकई सुमित्रा मिल मनमे सुख पायो ३-१
बैठे राम राज सिंहासन जगमें फिरी दुहाई ॥ निर्भय
राज रामको कहियत सुरनर मुनि सुख पाई ३-२
चार मुनि धरि दशमन आये चारवेद निजरूप प्रस्त
ति करी बहुत नाना विध रीझे कौशिल्यभूप ३-३

५२

शिव विरंचि नारद सनकादिक सब दरशन को आये ।
राम राज बैठे जब जाने सब हित मन सुख पाये ३·४
लोकपाल अनही मन हरषे सब सुमनन बरषाये ॥
पुष्प विमान बैठ हरि आये लै कुवेर पहुंचाये ३·५ ॥
अति आनंद भयो अवनी पर राम राज सुखदास ॥
कृतयुग धर्म भये त्रेता में सरनरमा प्रकास ३·६ ॥

अश्वमेध बहु यज्ञ किये पुनि पूजै द्विजन अपार ॥ हय
गज हेम धेनु पाटंबर दीन्हें दान उदार ३·७ चरित अने
क किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीनौ ॥ जनक
सुता बहु लाड लडावत निपट निकट सुख कीनौ ८
जोन बसंत बहुत द्रुम फूले जनक सुता अनुरागे ॥
प्रेम प्रवाह प्रगट प्रगटायो होरी खेलन लागे ३·९

कबहुंक निकट देखि बरषा ऋतु झूलन संग ॥
हिंडोरे रमकत जमकत जनक सुता संग हाव भाव
बिन थोरे ३० कबहुं कमल सरोवर उपवन जनक सु
ता संग लीने ॥ नाना जल बिहार बिहरत है संतजन
न सुखदीनैं ३१ कबहुंक रतन महल चित्रसारी
सरद निसा उजियारी ॥ बैठे जनक सुता संग बि

वे॰रा॰
१५४
154

लसत मधुर केलि मनुहारी ३२ कबहूंक श्रगार रचना
ना विधि लिय सजोय सुखकारी ॥ कबहूंक निरतन दे
व नदी लखि रीझत हैं सुखभारी ३३ राम विहार क
ह्यो नाना विधि वालमीक मुनि गायो ॥ वरनत चरि
त विस्तार कोटि सतन अपार न हि पायो ३४ सुरसम
इकी बूंद भई यह कवि वरनन कहा करै है ॥ कहत

५३

चरित रघुनाथ सरस्वती बैरीमत अनुसरिहै ३१५ अप
ने धाम पठाय दिये तब घर बासी सब लोग ॥ जैजै जै
श्रीराम कल्यान कह प्रगट अयोध्या भोग ३१६ दुष्टदपति
जब बैठे भुवपर धरि भृगुपति को रूप ॥ छिन मै भुव
को भार उतारेव परसराम द्विज भूप ३१७ ब्यास रूप
कै वेद बिस्तारे कीन्हे प्रगट ग्यान ॥ नाना बाका धर्म

पापन को तिमिर हरन भव भारन ३८ बुद्ध रूप क
लि धर्म प्रकाश्यो दया सबन की मूल ॥ हर कियो पा
खंड वाद हरि भगवान को अनुकूल ३९ कलि के आ
दि अंत ज्ञान ग्याके है कलकी अवतार ॥ मारि म्ले
च्छ धर्म फिर थाप्यौ भयो जग जयजयकार ४० कर्म
वाद पापन को प्रगटे ऋषि गर्भ अवतार ॥ स्वयापान

दीन्हों सुरगनको भयो जग यश विस्तार ३२१ असुर
न को व्यामोह कियो हरिधरो मोहनीरूप ॥ अमृत
पान कराय सुरनको कीन्हे चरित अनूप ३२२ नैसेंही
भव भार उतारन हरि हलधर अवतार । कालिंदी आ
कर्षि कियो हरि मारि दैत्य अपार ३२३ गज अरु ग्राह
लरे जल भीतर तब हरि सुमिरन कीन्हों ॥ छोडगरु

वे॰ग॰ १५६ 156

उ सुखधाम सांवरो भक्तन को सुख दीन्हो ॥२२४॥ जब

बहु असुर बढि पृथिवीपर कियो अनर्थ विस्तार ॥

सन्तसेन प्रगटे विश्वंभर सन्त कियो है अपार ॥२२५॥

निज वैकुंठ बसायरमापति कियो रमाकोहेत ॥

विनती सुनि कमला की केशव कीन्हो सुख संकेत

॥२२६॥ ब्रह्मचर्य थापन के कारणधरो विष्णु अवतार ॥ ५५।२

जहं तहं मुनिवर निज मरियादा थापी प्रगट प्रचार
१२७ अजित रूप है सैल धरो हरि जलनिधि मथवे का
ज ॥ सुर अरु असुर चकित भये देखत किये भक्त के
काज १२८ जब बलि राजा गये देवपुर लीन्हौं स्वर्ग छु
डाय ॥ अदिति दुखित भई कश्यप सों विनती करी
सुनाय १२९ तब कश्यप मुनि कह्यो पयो व्रत विधिसों

बे·रा·
१५८
157

करी बनाय। ताकौ ह्वाव जन्म हरि लीन्हौं श्रीवाम
न सुखदाय ३३० भादौं श्रवण द्वादशी शुभ दिन थ
ये विप्र हरि रूप॥ शिव विरंचि सनकादिक आये
वन्दनको सब भूप ३३१ यज्ञउपवीत वियोककि
यो विधि सबन्हर भिक्षा दीनी॥ वामन रूप बले
हरि द्विज वर बलि को मन सुख कीनी ३३२ देउ क ५६

मंडल हाथ विराजत ओर ओढे मृगछाला ॥ पवि
बहुरूप चले वामनजू अंबुज नैन विशाला ३३३
सूरज कोटि प्रकाश अंगमैं कटिमैं खेला विराजै ॥
करी वेद धुनि रूप हीर्यै मनहु महाघन गाजै ३३४
सुनि धाये तबहीं बलिराजा आय चरण सिर नायो॰
विनती करी बहुत सुखमानो आज भयो मन भायो ३३५

बलिये विप्र यज्ञ शालामें जहां द्विजवर सब राजै । श्रा
ये ब्रह्म सभामें वामन सूरज तेज बिराजै ३३६ तब नृ
पकह्यो कछू द्विज मांगो रतन भूमि मणि दान ॥ ह
य गज हेम रतन पाटम्बर देहों प्रगट प्रमान ३३७ ॥
तब बोले वामन यह बानी सुन प्रह्लाद जल भूप ॥
बड्डन प्रति ग्रह लेत विप्रजो जाय परत भवकूप ३३८

तीन पैड वसुधा हम पावै परन जुटी एक कारन ॥
जब नृप भव संकल्प कियो है लागो देह पसारन ३३४
एक पैंडमें वसुधा नापो एक पैड सुरलोक ॥ एक पै
उ दीजै बलि राजा नव ह्वै हो विनशोक ३३५ नापो देह
हमारी द्विजवर सो संकलिपत कीन्हो ॥ सुन प्रसन्न
वामन यों बोले तैं मोकें बस कीन्हो ३३६ सदा द्वार

बे-रा- १५९
159

नेरे ठाढो है दरशन देहौं मोहि ॥ माया काल कबहुं
नहि व्यापै सुमिरन करतै मोहि ३४२ सुतल लोकमै
थिरकर थाप्यो जहं विभूति अति भारी । राखिहैं बा
दा द्वारपर ठाढे वामन ब्रह्म मुरारी ३४३ स्वर्ग लो
क दीन्हों सुरपति को पुनि थिर करकर थाप्यो । नि
गम नेति कहि रटत निरनर देव शत्रु सब कांप्यो ३४४

५८

बामन रूप बलिछलि प्रगटे जिनको यश जग गावे ॥
शेष सहस मुखे रटत निरंतर ताहू पार किम पावै ३४५
पुन बलिराजहि स्वर्ग लोक मैं थापैगे हरिराय । सावि
भौम अवतार धरैगे श्री बामन सुखदाय ३४६ इति
विश्व रूप एक हरि लैगे सकल जगत कल्यान । कप
ट खंड पाखंड असुर कौं थापे भक्त निदान ३४७ ॥

बे॰ना॰ ९०

160

विषक सेन रूप हरि लैंगे कीन्हो शिवको हेत ॥ अस
र मार सब नरन बिडारे दीन्हे रुद्र निकेत ३४८ धर्मसे
न है धर्म बढायो भवि को धारन कीनों ॥ शेष रूप है
धरा सीस फिर सब जगको सुख दीनों ३४९ अंतर
यामी पालन कारण निज स्वधर्म धरि रूप ॥ अन्न
दान दै सब जग पोख्यो किये काज सुरभूप ३५० ॥

योग पंथ पातंजल भाष्यो सोउ छीन जब जान्यो । यो
गेस्वर वपु धरि हरि प्रगटे योग समाध प्रमान्यो ३५१ ॥
क्रिया पंथ ऋषिनि ने जो भाष्यो सो सब प्रचार मिटायो ॥
अहद भाव है कै हरि प्रगटे छिन में फिर प्रगटायो ५२
यह अनेक अवतार कल्प के को करि सकै बखान ॥
सोई सूरदास ने बरने जो कहै व्यास प्रमान ॥ ३५३ ॥

ऐस कला अवतार श्याम के कवि पै कहत न आवै·
जहं जहं भीर परत भक्तन को तहं तहं वपु धरि धावै
३५४ माया कला ईश वनवानन वनखंड परिरूप·
वायु वरुण अरु यम कुबेर शशि मरुत अग्नि सुर
भूप ३५५ रवि शशि मनु मरीचि सुर गुरु अरु चार
वेद वपु जान । जग कौ प्रगट करन परजापति व

गरे कला निधान ३५६ जो जो भूप भये सब मंडल
लोकपाल निजजान ॥ निज महिमा हरि प्रगट क
रीहै बिधि के बचन प्रमान ३५७ सुर ग्रह सहस रवी
हरि रचना सो जग प्रगट सब कीन्ही ॥ क्रीडा करी
बहुत नाना बिधि निगम बात दरसीन्ही ३५८ य
हि बिधि होरी खेलत बहुत भांति सुख पायो ॥ धरि

अवतार जगतमैं नाना भक्तन चरित दिखायो ३५॥
अंश कला अवतार बहुत विधि राम कृष्ण अवतारी॰
सदा विहार करत ब्रजमंडल नन्दसदन सुखकारी
३६॰ नित्य अखंड अनूप अनागत अवगत अनन्त
अनेन ॥ जाको आदि कोऊ नहि जानत कोऊ न पा
वत भेन ३७॥ जब हरि लीला की रुचि कीन्ही प्रगट

करन विस्तार। श्रीवृषभान रूपहै प्रगटे धनि व्रज

राज उदार २६२ विया ब्रह्मकही यशमति सोंजा

की रूपउदार। सोरह कला चंदज्यों प्रगटेदोनों ति

मिर विदार २६३ सुनवसुदेव देवकी कहियत परि

ले हरि वर पायो ॥ इसम भाग्य आय हरि प्रगटे यहु

जल नापन मायो २६४ आदेउह रोहनी आई शोख

चक्र वपु धारो । कुंडल लसत किरीट महाद्युति वपु
वसुदेव निहारो । अस्तुति करी बहुत नाना विध
रूप चतुर भुज देख्यौ । पीतांबर प्रभु श्याम जलद
वपु निरख सुफल दिन लेख्यौ ३६६ तब हरि कह्यो
जन्म तुम्हारे गरभ तीन बार हम लीन्हो ॥ पृश्नीगर्भ
देव वामन को कस्यप रूप संग भीन्हो ३६७ मांगो सक

ल मनोरथ अपने मन वांछित फल पायौ ॥ शंख
चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयौ ३६८
यह भव भार उतारन कारन हलधर को संग लायौ ॥
क्रीडा करी लोक पावन कर करैं भक्त मन भायौ ३६९
प्राकृत रूप धरो हरि छिनमैं शिशु ह्वै रोवन लागे ।
नव वसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रसपागे ३७०

बे-गा
१६४
164

नव देवकी दीन है भाष्यो न्रपको नाहि पतीजै । अहो
वसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ॥ ३२१ ।
नव लै हरि पलना पोढाये पीतांबर जु ओढायो । न
व वसुदेव शीस धरि पलना भयो सबन मनभायो ३२२
गोकुल चले प्रेम आतुर है खुलगये कपट कपाट ।
सोये स्वान पहरु अरु सोये सबै मुक्त भई बाट ३२३

नव वसुदेव लियो कर पलना अपने शीश चढायो ।
रैन अंधेरी कछु नहि सूझत अटकर अटकर आयो ७४
शेष सहस फन ऊपर छाये उनकी वेद बडावें । आगे
सिंह हंकारत आवत निरभै बाट जनावें ७५ जमु
ना अति जल हर वहत नैहे चरण कमल परसायो ॥
मारग दीन्ही राम सिंधु जैंा नन्द भवन चलि आयो ७६

बे॰ रा॰ पहुंचे आय महर मंदिर में नेकन सेकाकीनो । बाल
२६५ क धरि लैके सुरदेवी सुरत गवनकी कीनो ॥ ३७३॥
165 लै वसुदेव सुरत घर आये काहु जिय नहि जाने । जब
वह रोवन लागी तब सब जागपरे अकुलाने ७४ बाल
क भयो कह्यो नृपसौं जब दौरि कंस तब आयो । कर
गहु खड्ग कह्यो देवकि सौं बालक कहे पठायो ७५

नव देवकी अधीन कह्यो यह मैं नहिं बालक जायो ॥
यह कन्या मोहि बकस वीर तकीजे मो मन भायो ३७६
कंस वंसको नास करत है कहा समझ बिसरायो ॥
मोको भई अनाहदवनी तातें डर नहि जानी ३७७ क
न्या मोगलई नवराजा नेक शोक नहि आनी ॥ पट
कन शिला गई आकासे कंस अतीत न माती ३७८।

वे॰ ग॰
९९
166

भई आकाश बानी सुरदेवी के सुत यहो अब आई । तेरो
शत्रु प्रगटे वहु ब्रजमे काहु लख्यो नहि जाई ७९ ॥
जैसे मीन करत कल क्रीडा जलमे रहत समाई । त्यो
तब काल प्रगट एक कहत है लखए सकत न तेहि
कोई । ८० श्रेनत ध्यान भई सुरदेवी केसु प्रतीत जो
मानी । तब वसुदेव देवकी के गृह केसु गयो यह

जानी ३८१ तुम अपराध देहकी मेरो लिख्यो न मेट्यो
जाई । मैं अपराध कियो सिसु मारे कर जोरे विलकाई ।
३८२ सुन गृह आय सेज पर सोयो नेकु नींद नहि आवै ।
देश देश के दूत बुलायो सबहिन मतो सुनावै ॥ ३८३
दीन हीन जो अक्षर बाछत बलि करत सकल सुनि तै
सो । हूजत नहि तन भार उतारैव जलको मांखिन जैसो

वे॰ग॰
२५७
167

भयो भोर यशुमति गृह आनंद मंगल चार बधाई ॥ जा
गी महर पुत्र मुख देख्यो आनंद उर न समाई ३८५ जैसे
शशि प्रगटत प्राची दिशि सकल कला भरि पूर । यशु
मति कूप आय हरि प्रगटे असुर तिमिर कर दूर ३८६
नंदराय घर ढोटा जायो महर महा सुख पायो ॥ वि
प्र बुलाय वेद धुनि कीनी सखी वचन पढ़ायो ३८७ ॥

६६

रागिनी बंगाली ताल ३ ॥ गजल शेर ॥ टुक हिरस
हवाको छोड मिया मत देस विदेस फिरे मारा ॥ क
जाक अजलका लुटेहै दिन रात बजाकर नक्कारा ॥ का
भैसा वधिया वेल शुतर क्या गोने पला सिर भारा ॥
क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुआ अंगारा
सब ठाट पडा रहजावेगा जब लाद चलेगा वनजारा १ ॥

वे·ग·
१६८
168

गाहै नलकाखी बनजाता और खेपभी तेजी भारीहै ॥
अथ गाफिल नजसेभी बढ़ता एक और बडा ओपा
रीहै ॥ कपाशक्कर मिसरी कंद गिरी का मासूर भी
ठा खारीहै ॥ का दाख मक्कासोंठ मिरच का केस
र लौंग खपारीहै २ नवधिया ला देवें नभरेजो
पूरब पश्चिम जावेगा ॥ यासूद बफ़ा कर लावे

ग·१

गा या घाटा बाधा पावेगा । बटमार अजल का रस्ते में
जब भाला मार गिरावेगा । धन दौलत नाती पोता
क्या एक कुनबा काम न आवेगा ॥ ३ ॥ हर मंजिल
में अब साथ तेरे यह जितना डेरा डांडा है ॥ जरदाम
दिरम का भांडा है बंदूक सिपर और खांडा है ॥ जब
नाइक तन का निकल गया जो मुलकों हांडा है ॥

बे॰रा॰
२८५
169

फिर टोडाहै मैं भेडाहैने हलवाहैने मोडाहै ४ ॥
जब वलते वलते रस्तेमै यह गौन मेरीफल जावे
गी ॥ एक वयीया तेरी महीपर फिर चरने वास
न आवेगी ॥ यह खेपजो बने लादीहै सवहिस
सेमैं वट जावेगी ॥ धीहत जवाई वेटा का वनजा
रा पास न आवेगी ॥ ५ ॥ कैसों नाहक वोझ ३

ठा नाहै इन गौनों भारी भारी के । जब काल लुटेरा
आन पड़ा फिर हूनैं है ब्योपारी के । क्या साज जड़ाऊ ज
र जेवर क्या गोटे थान कीनारी के । क्या घोड़े जीन सु
न हरों के क्या हाथी लाला अमारी के ६ जो खेप भरे
तू जाता है यह खेप मियां मत जान अपनी । अब को
ई घड़ी पल सायत में यह खेप बदन की है खपनी ॥

171

तावेने शाल दुशालौंके ॥ ८ ॥ कछु काम न आवे
गा तेरे यह लाल जमर्रद सीमो जर ॥ सब पूंजी बा
टमें बिखरेंगी जब आन बनेगी जोऊर ॥ क्या मसने
द तकिए मुलक मकान क्या चौकी कुरसी तखतनछ
तर ॥ क्या मालखजाना मुलक मकान दौलत
हशमत फौज लशकर ॥ ९ ॥ यह धूम धड़का सा

605
9-11

वे॰ ग॰ १७१

य लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल । एक मूमगा
पासन आवेगा मौक़ूफ़ हुआ जब अन्न और जल ॥
वर बार अटारी चौपाये क्या खासा नैन सुख का म
ल मल ॥ क्या विल वनन कीये रेशम के क्या ला
ल पलंग का रंग महल ॥ ९ ॥ क्या उवेन म
कान बनता है हैरंवभ नेरे ननका पोला । ने ऊंची

गाढी उठानाहै यहां गोरगाढने मह खोला ॥ कारे
नी खबर करन्द वहां का कोट झेगरा ग्रममोला ॥
कावजीं हला तोप किला काशी शादाह रौर गो
ला ॥ ११ ॥ अब काल फिरा कर चावक को यह बै
ल वदन काहां केगा ॥ कोई नाज समेटेगा नेरा
कोई गौन सिंये और टोकेगा ॥ होफेर अकेला जेगा

वे॰ग॰
१७२
172

लमें तबाक कल हदकी फाकेगा ॥ उस जंगलमें
जब आहनजीर पकजनगा आनन फांकेगा ९२ ॥
यह पेंठ अजाबहै इनियांकी और क्या क्या जिनस उ
कटीहै ॥ यहां मालकीसीका मीठाहै और बीज कि
सिकी खहीहै ॥ ऊब्ब पकताहै ऊब्ब बनताहै प
क वान मिठाई पडीहै ॥ जब देखो हिवनो आगिव

रको नेलहा भाउन महीहै ॥ गल श्रोर बबूला श्रागार
वा श्रौर कीचड पानी महीहै ॥ हम देखेझके ईस ड
नियोको सब धोखेकीय सीहीहै ॥ कोई नाजखे दीदे
हैस हैसकर कोई नाचेनगा गावन धानाहै ॥ कोई क
पडे वेगोपहणोहै कोई गठडी श्रोढे जाताहै ॥ कोई
भाई बाप चाचा मामा कोई मानी पन कहा नाहै ॥

बे॰ग॰
१७३

जब देखा खूबतो आखिरकोमे बिकताहै ने नाताहै
इगलखोर । कोई सेठ महाजन लाखपती जेवजाज
कोई घम भारीहै ॥ यहां वाजा किसीका हलकाहै
और खेप किसीकी भारीहै ॥ क्या जानेकोन खरी
देहै और किसने जिनस उतारीहै ॥ जब देखा
खूबतो आखिरको दलाल न कोई व्यापारीहै १४

कोई झलके वैठे मसनंद पर कोई रोवे अपनी दौलत
को ॥ कोई बोले अपना मजसेला और मेरा है सा मज
कोरो ॥ कोई लडना है कोई मरना है जवाडे हक और
नाहक को ॥ जब देख हवनो आखिर को कबुले
ना एक न देना दो १५ रम्माल नजूमी आ मिल है
और फाजिल मुल्ला स्याना हो ॥ कोई आमिल कामि

तदाना कोई मन्त्र सिद्ध दीखाना है ॥ तावीज फतीला
फालफकंहु ओर जादु मेतर लाना है । जब देखा छू
बतो आखिरको सब हीला मकर वहाना है २६ । को
ई लोटे छुवे गालियोंमे तैयार किसीका चेरा है ।
नित कजीये झगडे रहे है यह मेरा है यह तेरा है ॥
जब देखा छूबतो आखिर कोन मेरा है ॥ २७ ॥

कोई टोपी टोप बनाता है कोई चोगा फिरा अम्मामा है ॥
कोई साफ बरहना फिरता है ने पगडी न पाजामा है ॥
कम क्रोध गाजी और गाढ़े का नित कजीया है ॥ जब
देखा खूब तो आखिर को ने पगडी है ने जामा है १८
कोई बाल बढ़ाए फिरता है कोई सिर को घोट मुंडा
ता है । जब देखा खूब तो आखिर को सब छोड़ अकेला

बे·रा·
१७५
175

जाताहै । १९ । कोई रोताहै कोई हसताहै कोई नाचे
है कोई गाताहै । कोई स्त्री ने झपटेले भागे कोई थोस
डर दिल लाताहै । कोई माल इकटा करताहै कोई
कुंजी कुलफ लगाताहै । जब देखा हवतो आखिर सब
झगड़ा रहा जाताहै २० कोई वेवे भंग सराव अफ ए
म कही हथ दहीकी फेरीहै ॥ कोई पला सिर पर

लागाहै कोई लाईदेवे लमुकेरीहै । कोई उगाडे अपनी
जागाह पर यह मेरीहै यह तेरीहै ॥ जब देखा खूबतो
आखिर कोन तेरीहै न मेरीहै न तेरीहै २२ कहींवली
टेकी एनीहै कहीं खासी कडवकी डलीहै ॥ कहीं
वलनी ब्याज पिटारीहै कहिं डलहा वक्की डलीहै ।
तरकारी वैगन साग हरा उड गाजा गाजर मलीहै ॥

बे॰ग॰
१७८

176

जब देखो ह्वबनो आबिरको सब बिकरी देखन भइ
लीहै २२ कहीं थान पटेरन टाट पगाजी कहीं दमर
ख बमरखन कलाहै ॥ कहीं रोक रुपयेका खरदा
कहीं कौडी पैसा पैलाहै ॥ कहीं ब्रटना ब्राज पि
टारीहै कहीं बिकना खोट खरो लाहै ॥ जब देखो
ह्वबनो आबिर कोने पीछी खोट न चरखोहै ॥ २३ ॥

कोइ शिकरा बाज उडाताहै कोई हाथमें रखके नतली
है ॥ शरबाज कोईले बैठाहै और दौड किसीने उलती
है ॥ हैनार किसीके हाथोंमे और नाचती फिरत उन
लीहै ॥ जब देखा खुबनो आखिर कोनदे शमस न
न सनलीहै २७ अब किस्का रंग बुरा कहिये और
किस्का रूप भला कहिये । एक दमकी पैठ लगी

वे॰ ग॰ १७७

177

है यह अम्बोहम जा वरना कहिये ॥ ये सैरत माशादे
नाखजीर अवजा कहिये रेजा कहिये । कछु वात
नहीं वन आनेकी उप वाप भला है क्या कहिये । ग
लशोर वहूला आगहवा औरकी वड पानी मही है ॥
हम देखचुके इस दुनियांको सबधोखेकी सटी है २५
वटमार अजलका आपहुँचा टुक इसको देखडरो वावा

अब याकबड़ा थो आवौं से और आह सरद भरो बाबा ॥
दिल हाथ उठा कर जीने से बेदम मन मार मरो बाबा ॥
जब बाप की खातिर रोते थे अब अपनी खातिर रो बा
बा ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर जीन धरो बा
बा २६ जब जीने को नस हाबसनदो और मरने को
मह मान करो ॥ वैरान करो इह सान करो याप्त्र

बे॰ रा॰ १७८

178

करो या दान करो ॥ या छुरी लड़ बटवा खोया खो
सा हलवा नान करो ॥ कुछ लतफ नहीं अब जी
नेमें अब चलने का सामान करो ॥ २७ ॥ तन
छुपा ॥ दिल काटे अपना जीनेसे अब और गलेको
मन काटे ॥ अब बाट फनाकी इक चक्खो और
छुन किसीका मन काटे ॥ अन छोड़ो हिस्से ब

रवैरकी औैर भाजी अपनी तम कोटे ॥ नाकेद वछेरे

कूद डुके अब औैर डलनी मन छोटे २८ यह अस व

ऊन कूदा उछला अब कोडा मारे जेर करे ॥ अब मा

ल इकठा करतेथे अब तनका अपने फेर करे ॥ गा

फ टूटा लशकर भाग डुका अब जानमैं तम शान शे

र करे ॥ तम सांज लडाई हार डुके अब भागनेमैं म

न देर करो ॥ २९ ॥ सिर कोण चोटी बालऊ पगह
पीला पलकै आन झुको ॥ कद देखा कान रूप वह
रे और आंखें भी छु पलाय गई ॥ ख्वाबे नीद गई और भू
ख जती दिल खसत हुआ आवाज नहीं ॥ जो होनी थी
सो हो गुजरी अब चलनेमे कुछ देर नहीं ३० ॥ इस
पाव खिसट कर चलनेसे मत रस्तेको हैरान करो ॥

और पोपले मूहसे रोटीको मत मल मल कर हलका
न करो ॥ अब आपइप तम पानीसे मत पानीका न
कसान करो ॥ कुछ लाभ नहीं इस जीनेमें अब मरने
से परहेज न करो ॥ ३१ ॥ कपनाल ॥ ज्ञान मथ
माते सोनरकै ये जिनको रहतहैं निस दिन खुमा
री ॥ ज्ञान मथ पीवत भेहै खुमारी सरन अंतर खे

ले लगी रहनारी ॥ अनेंद्रन मेरो सदा निसवा सर
नरक स्वर्ग भाग गये इक वारी ॥ कहत कवीर स
नो भाई सारो गुरुकीनो षीन मोहे हरहूंसें प्यारी ३२
कवित ॥ ताल ॥ शूलफाक ॥ पहरे आई नव स
त अवरन अतंही सुंदर लया वहोत सियानी ॥ गो
रे वदन पर अलकां छूटी मानो चंदन ले पटानी ॥

मृगसे नैना कोकिल बैना कटके हर गजचाल सुहा
नी ॥ शाहे बहादुर ये छब निरखत इंद्रलोककी अप
सर बिसरानी ॥ ३३ ॥ ख्याल ताल ३ ॥ छुडगल
बोहू प्यारे भोरभै अंडना ॥ दीप बाकी जोत चटी बे
दइंका चांदना ॥ मोतनके हार सीतल फरि आयो
अंजना ॥ ३४ ॥ ख्याल ताल ३ ॥ साडे ताल बो

वे॰रा॰
१८१
18

लीवे आमीवे वेंजेटे आवोपैंगामि आलोदी आगालि
आ ॥ हथ हिंडि मोडे कारी कमरीया वाप अमाडे दे
या पालिआ ॥३५॥ दुपाल नाल ३ ॥ मीयां राजावे
मोणा तिन माडे आडोदा ॥ माडढी गल मनदा नहि
आपना आपजनामदा ॥ कोई ममझाउदा कौ पेहुप
मावेढ दिखलामदा ॥ ३६ ॥ दुपाल । नाल ३ ॥

पै गल मैनू नै दसीवे मीयां मोणीदे आमनदी उगाही
मिउआ दैंदा ॥ मैं चंदन नेरा अजब परशवा केली उ
है गल हसिवे मीआंदा ॥ ३७ ख्याल ताल १ महत
लागी वैमीयां मैडी नैडे नाल नसी जाणदे नाहीं खो
न योवन प्यारा चिरजग जीवे ईशक नसाडे नपठ
गी ॥ ३८ ॥ इतिशैरगजल ॥ ॥

ཞེ་ག་
༡༨༢

༡༨༢
༢༢
༡༦༠

मिळति सथा मेवाय विंवाधरे। श्रेणा केन दले

जरुहणा मिह भ्रुदेण लक्ष्मीलव क्रीते दास इवो

प सेवित पदांभोजे जतः संभ्रमः ७१ सा ससाध्वस

सानंद गोविंदे लोल लोचना सिंजान मंजमंजीरं

प्रविवेश निवेशनं ७२ श्रुति कमला पांगे श्रवणा

पथ्य पर्यंत गमन प्रवासै नेवाक्ष्णो स्तरल तरता

रा.म.
गी.

स्खलितयोः । तदानीं राधायाः प्रियतम समालोक
समये पपात स्वेदांबु प्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः
७३ भजन्त्यास्तल्पान्ते कृतकपटकण्डूतिपिहितः
स्मितेयाते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने । प्रियास्यं
पश्यन्त्याः स्मरशरसमाकूतसुभगं सलज्जा ल
ज्जाव्यगमदिवदूरं मृगदृशः ७४ ॥ अष्टपदी ॥

म
४५

राधावदन विलोकन विकसित विविध विकार वि
भंगं । जलनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित तुं
ग तरंगं । हरि मेकर सं चिर मभि लषित विलासं ।
सा दर्श गुरु हर्ष वशं वद वदन मनंग विकासं । हा
र ममल तर तार मुरसि दधतं परिलंब्य विदूरं । स्फु
टतर फेन कदंब करंबित मिव यमुना जल पूरं ॥४॥

गी. गो.

श्यामल मृदुल कलेवर मंडल मधिगत गौर दुकूले
नीलनलिन मिव पीत पराग पटल भर वलयितमू
ले ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन जनित र
तिरागे । स्फुट कमलोदर खेलित खंजन युगमिव
शरदि तडागे ४ वदन कमल परिशीलन मिलित
मिहिर सम कुंडल शोभे । स्मित रुचि कुसुम समु

लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभम् ५ शशिकिर
णछुरितोदरजलधरसुंदरसकुसुमकेशं तिमिरो
दितविधुमंडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशं ६
विपुलपुलकभरदंतुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरं
मणिगणकिरणसमूहसमुज्वलभूषणसुभग
शरीरं ७ श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृत

ग॰ग॰
मी॰

भूषणभारं। प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सु
कृतोदयसारं ८ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ गतवति स
खीवृंदे मंदत्रपाभर निर्भर स्मर पर वशाकूतस्फीत
स्मितस्नापिताधराम्। सरस मनसं दृष्ट्वा दृष्ट्वा मुहु
र्नव पलव प्रसर शयने निक्षिप्ताक्षी मुवाच हरिः
प्रियां ॥ किसलय शयने तले कुरु कामिनि चरण

5 म ५१

कमल विनिवेशे। नवपद पल्लव वैर परा भव मिद

मन भवनन्नवेशे १ क्षण मधुना नारायण मनुग

त मनुसर राधिके। ध्रु-। करकमलेन करोमि चरण

मह्मागमितासि विदूरं। क्षण मुप कुरु शयनो

परि मामिव नूपुर मनुगति शूरं २ वदन सुधानिधि

गलित ममृत मिव रचय वचन मनुकूलं। विरह

मिवापनयामि पयोधरतोयकमरसिंडहल ॥३॥
प्रियपरिरंभणरभसवलितमिव पुलकितमतिदु
रवापम् । मधुरिपुरितिजव कलशे विनिवेशय शोषय
मनसिजतापम् ४ अधरसुधारसमुपनय भामि
नि जीवय मृतमिव दासम् । त्वयि विनिहितमनसं
विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ५ शशिमुखि

स्खलय मणि रशना गुण मनुगुण कंठ निनादम्
श्रुति युगले पिककलत मम शमय चिरादवसादे ६
मामति विफल रुषा विकली कृत मव लोकितम
धुनेदं। मीलति लजित मिव नयने नव विरमवि
सृज रति खेदम् ७ श्रीजयदेव कवेरिदमनुपदति
गदित मधुरिपुमोदम्। जनयतु रसिकजनेषुम

गी॰गो॰

नोरम रति रस भाव विनोदम्।८।। अष्टपदी।। श्लो

क।। प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविडाश्लेषे निमेषेण

च क्रीडाकूत विलोकिते धरसुधा पाने कथा नर्म

भिः आनंदाधिगमेन मन्मथकला युद्धेपि यस्मिन्न

भूदुद्भूतः सतयोर्बभूव सुरता रंभः प्रियंभावुकः

२६ मीलद्दृष्टि मिलत्कपोल पुलकं सीत्कारधाराव

म
५३

शारद्यकाजलकेलिकाङ्कविकसद्धेताक्ष्यौ नाय
रे स्वसोन्नाम्रपयोधरे भरशपरिष्वंगान कुरंगीदृशो
हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनोर्धन्यो धयत्याननं ७८
दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै
राविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः ह
स्तेनानमितः कचेधरमधुस्यन्देन संमोहितः का

रा॰म॰
गी

नः कामपि त्वमि मापनदह्रो कामस्य वामा गतिः ७८
वामांके रतिकेलिसंकुलरणारंभे तया साहसप्राये
कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्रमान्निस्पंदाज।
घनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कंपितं वक्षो मी
लितं मक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति ७९। न
म्राः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ

५३
म
५८

र्निर्द्धौतो धरशोणिमा विलुलिता स्रस्तस्रजो मूर्द्धजाः

कांचीदाम दरश्लथांचलमिति प्रातर्न्निवोतैरशोरेभिः

कामशरैस्तदद्भुतमभूत्पत्युर्म्मनः कीलितम् ८ स्वप्न

कांते रति श्रांत मपि मंडने बोलयानिज गाढ तिरावा

या या या स्वाधीन भर्त्तृका ८८ इति मनसा निगदंते

सर्वांते सानि तेन निवक्तं गी या या जगाद सा दश मि

ग॰ म॰ गी॰

दमानंदेन गोविंदे दश अष्टपदी ॥ कुरु यदुनंदन चंद
न शिशिरतरेण करेण पयोधरे । मृगमदपत्रकम
त्र मनोभव मंगल कलश सहोदरे १ निजगाद सा य
दुनंदने क्रीडति हृदयानंदने । दधर चुंवन लंवितक
जलमुज्वलय प्रियलोचने अलिकुल गंजन मंजनके
रतिनायक मोचने २ नयन कुरंग तरंग विकासनि

55

म ५५

वामकरे स्फटिकमंडले । मनसिज पाश विलास करेशु

भवेषु निवेशय झंउले २ भ्रमर वर्ये रचयेन मपीर हवि

रे सखिरं मम सन्निधेॅ जिन कमले विमले परिकल्प

य नर्मजन कमल केसवे ४ मृगामद रसललिते

ललिते कुरु तिलकमलिक रजनीकरे । विहित

कलंक कलंकमलानन विश्रमित श्रम शीकरे ५

रा॰म॰
गी॰

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानसजधज चामरे ॥
रति गलिते ललिते कुसुमानि शिखंडि शिखंडक डा
मरे ६ सर सघने जघने मम शंवर दारण कंदरे । मणि
रशना वसना भरणानि शुभाशय वासय सुंदरे ॥७॥
श्रीजयदेव वचसि जयदे सदयं हृदयं कुरु मंडने ॥
हरिचरण स्मरणामृत कृत कलि कलुष ज्वर खंडने ८

58

म॰
५६

श्लोक ॥ रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो
र्घटय जघने कांचीमंच स्रजा कवरीभरं । कलय व
लयश्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरा विति निगदितः प्री
तः पीताम्बरोपि तथाकरोत् २४ प्रातर्नील निचोलम
च्युत मुरः संवीत पीतांशुके राधायाश्चकिते विलो
क्य हसिति स्वैरं सखी मंडले ॥ व्रीडाचंचल मंचले न

गा॰म॰ यन्नयो गाथाय बाधानने स्वैरे स्मेर मुखांबुजोस्तु जग

गी॰ दानंदाय नंदात्मजः ८४ पर्यंकी कृत नाग नायक

फणा श्रेणी मणीनां गणे संक्रांत प्रति बिंब संवल

नया विभ्रद्विभुः प्रक्रियाम्। पादांभोरुह धारि वारि

धि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः। कायव्यूह मिवाचरे

नुपचिती भूतो हरिः पातु वः ८५ त्रियंक कंठ विलो 57 म ५७

नमौलिनरलोनेमसवेशोहर। गीतिस्थानकृताव
धान ललना लक्षैणा संलक्षिताः प्रेम्णा कन्दलिताः
संमुग्ध मधुरे राधा मुखेंदौ सुधा। सारे वो मधुसू
दनस्य ददतु क्षेमं कटाक्षोर्मयः।८॥ अष्टपदी॥
संचर दधर सुधा मधुरध्वनि मुखरित मोहन वंशं।
चलित दृगंचल चंचल मौलि कपोल विलोलवतंसं १

रा· म·
गी·

रासे हरि मिह विहित विलासे। स्मरति मनो मम कृ
त परिहासे चंदक चारु मयूर शिखंडक मंडल व
लयित केशे। प्रचुर पुरंदर धनु रनु रंजित मेदुर मु
दिर सुवेशे २ गोप कदंब नितंब वती मुख चुंबन
लंभित लोभे। बंधुजीव मधुराधर पल्लव मुल्लसि
त स्मित शोभे ३ विपुल पुलक भुज पल्लव वलयि

58

म
५८

न वंलव श्रवनि मज्ञसे । करचरणो रसि मणिग
ण भूषण किरण विभिन्नत मिस्रे ४ जलद पट
ल वल दिंड विलिंदक वेदन विंडु ललाटे । पीन प
यो धर पीरमर मर्दन निर्दय हृदय कपाटे ५ मणि
मय मकर मनोहर कुंड मंडित गंड मदारे । पीन
वसन मवगत मणि मनुज महाहर परिवारे ६

ग·म·
गी·

विशद कदंब तले मिलितं कलि कलुष भयं शम
यंतं । मामपि किमपि तरंग दनंग दृशा मनसा
रमयंतं ७ श्रीजयदेव भणित मति सुंदर मोहन
मधुरिपु रूपं । हरिचरण स्मरणं प्रति संप्रति पु
ण्यवतां मन रूपं ।८॥ श्लोक ॥ हस्त स्रस्त
विलास वंश मनृजु भ्रूवल्लि मद्बल्लवी वृंदोत्सा

रिटंगेन बीलिने भतिखेदाद्वी गंडस्थले । मामुद्दी
द्य विलजिन स्मिन हथा मुग्याननं काननै । गो
विंदं ब्रज सुंदरी गण हतं पश्यामि हृष्यामि च ८८
श्रेत मौह्रन मौलि हर्णीन चलन्नंदारविंदेक्षनःस्त
वाकर्षणा दृष्टि हर्षणा महामंत्रं कुरंगीदृशो । दृ
प्यद्दानव हूयमान दिविषदुर्वीरदुःखापदं ॥

रा॰म॰
गी॰

खेमः कंसरिपो व्यपोहयतु वो श्रेयांसि वेशीरवः
८९ यद्गांधर्वकलासु कौशलमनुध्यानंच यद्वैष्णवं
यच्छृंगारविवेकतत्वमपि यत्काव्येषु लीलायितं
तत्सर्वं जयदेवपंडितकवेः कृष्णैकतानात्मनः । सा
नंदाः परिशोधयंतु सुधियः श्रीगीतगोविंदतः
९॰ साध्वी माध्वीक चिंता न भवति भवतः शर्करे कर्क

म ६

60

केरा सिद्धाले इहेन निकेवा ममदते म्ब्ज मसिदीर नी
रे रसले। माकंदे क्रेद कोना यर परस्तिनले गछ
यछंति यावज्ञावे म्रंगार सारसत मय जय देवस्य
विश्ववचासि ॥ श्री भोज देव प्रभवस्य रामादेवी
सुत श्रीजय देवस्य। पराशरादि प्रियवर्ग कंठे
श्रीगीत गोविंदकवित्वमस्तु। जय श्री विमले

रा॰मं॰
गी॰

मिहित इव मेराय जलमैः स्वयं सिंहेशणा दिविशणा
मदा मदिहित इव । भजापीड कीडा हत कुवलया
पीडकरिणः । प्रकीर्णासृग्बिंदुर्जयति भुज दं
डो मुरजितः ९३ ॥ इति राग मंथ गीत गोवि
द परिछेदः समापनम ॥ शुभंमस्यात ॥

केरा सिद्राते दृक्ष्यंति केत्वा ममृतं मृत मसि क्षीर
नीरं रसस्ते । माकंद क्रंद कांताधर धरणितलं ग
च्छ यच्छंति यावद्भावं शृंगार सारस्वत मय जयदे
वस्य विश्वग्वचांसि १२ श्री भोज देव प्रभवस्य रा
मा देवी सुत श्री जय देवस्य । परा शरादि प्रियव
र्गि कंठे श्री गीत गोविंद कवित्वमस्तु । जय श्री

रा॰दे॰
गी॰

विन्यस्तैर्विहित इव मेदारक्तसमैः स्वयं सिंहेणादि

पिशितस्वदासहित इव । गजापीडक्रीडाहतकुव

लयापीडकरिणः । प्रकीर्णासृग्बिन्दुर्जयति भुज

दण्डो मुरजितः ९३ ॥ इति रागदेवशास्त्रस्य गी

तगोविंदपरिच्छेदः समापनम् ॥

62